# एक स्वस्थ कलीसिया के नौ चिन्ह

मार्क ई. डेवर

# एक स्वस्थ कलीसिया के नौ चिन्ह

मार्क ई. डेवर

सम्पादकः वी. के. सिंह
कार्यकारी सचिव, इण्डिया बाइबल पब्लिशर्स, नयी दिल्ली

525 ए स्ट्रीट एनई वॉशिंगटन, डीसी 20002
फोन (202) 543-1224, फैक्स (202) 543-6113
वैबसाइटः www.9marks.org

प्रथम हिन्दी संस्करण : नवम्बर, 2007

© 2005 मार्क ई. डेवर
सर्वाधिकार सुरक्षित
प्रथम हिन्दी संस्करण भारत में मुद्रित

# IX
## चिन्ह

यह परमेश्वर की इच्छा है कि वह अपनी सुन्दरता की महिमा, सिद्धता और प्रेम को कलीसिया के द्वारा प्रकट करे।

कल्पना कीजिए कि निम्नलिखित विषय हमारी स्थानीय कलीसियाओं में कैसे प्रतीत होंगे।

यदि गीत और प्रचार में परमेश्वर का नाम ऊँचा किया जाए।
यदि प्रेम और सेवा के द्वारा आपसी सम्बन्ध सुगठित हों।
यदि विवाहों और परिवारों के निर्माण स्थायित्त्व के लिए हों।
यदि मसीह का बलिदान पापमय किन्तु पश्चाताप करते लोगों के जीवनों में दिखाई देता हो।

'9चिन्ह संस्था' में हम लोग यह विश्वास करते हैं कि परमेश्वर के उस स्वरूप से बढ़कर जो उसके अपूर्ण किन्तु परिवर्तित होते लोगों के समूह द्वारा प्रकट होता है, और कोई दूसरा बेहतर **सुसमाचारीय साधन**, **मिशन-योजना** अथवा **विचार-विनिमय कार्यक्रम** नहीं है। जैसे-जैसे हम उसके विषय और अधिक सीखते जाते हैं, वैसे-वैसे हम और भी उसके समान दिखाई देने लगते हैं।

तब पास-पड़ोस और अन्य राष्ट्र आश्चर्य-चकित होकर देखेंगे; और इसी प्रकार स्वर्गीय सेना भी!

कलीसियाई अगुओं को अपनी कलीसियाओं के विकास के लिए किसी अभिनव परिवर्तन लाने वाली प्रणाली अथवा रूपक के प्रयोग की आवश्यकता नहीं है। उन्हें बाइबल-सम्बन्धी परमेश्वर के ज्ञान और उन प्राथमिकताओं को स्वीकार करने की आवश्यकता है जिन्हें स्वयं परमेश्वर ने स्थानीय कलीसिया-सभाओं में स्वास्थ्य एवं पवित्रता को बढ़ावा देने के लिए निर्मित किया है। वास्तव में पवित्रशास्त्र, कलीसिया के अगुओं को सिखाता है कि किस प्रकार ऐसी कलीसियाओं का निर्माण हो जो परमेश्वर की महिमा को प्रकट करें।

**'9चिन्ह संस्था' में, हम "कैसे होगा" जैसे प्रश्नों के उत्तर देने का प्रयास करते और मसीह की कलीसिया के लिए बाइबल-सम्बन्धी दृष्टि (दर्शन) प्रस्तुत करते हैं।**

| | |
|---|---|
| माध्यम (मीडिया): | उपलब्ध वैब-साधन, श्रव्य साक्षात्कार, ई-समाचार पत्र, शैक्षिक पाठ्यक्रम |
| अध्ययन : | सप्ताहांत प्रशिक्षण, सम्मेलन, स्थान-बद्धता, थिंक टैंक |
| प्रकाशन : | पुस्तकें, पर्चे, समाचार पत्र |
| सम्पर्क: | स्थान पर जाकर, टेलीफोन द्वारा |

अधिक जानकारी के लिए, www.9marks.org पर जाएँ अथवा फोन करें: (888) 543-1030.

# विषय-वस्तु


भूमिका 6

परिचय 7

**1.** व्याख्यात्मक उपदेश 11

**2.** बाइबल-सम्बन्धी धर्मविज्ञान 17

**3.** सुसमाचार की बाइबल-सम्बन्धी व्याख्या 23

**4.** मन-परिवर्तन की बाइबल-सम्बन्धी व्याख्या 27

**5.** सुसमाचार-प्रचार की बाइबल-सम्बन्धी व्याख्या 31

**6.** कलीसियाई सदस्यता की बाइबल-सम्बन्धी व्याख्या 37

**7.** बाइबल-सम्बन्धी कलीसियाई अनुशासन 43

**8.** मसीही शिष्यता और विकास की प्रोन्नति के प्रति चिंता 49

**9.** बाइबल-सम्बन्धी कलीसियाई नेतृत्व 55

उपसंहार 61

(परिशिष्ट)

एक स्वस्थ कलीसिया का ठेंठ प्रतिज्ञा-पत्र 62

पवित्रशास्त्र संदर्भ-सूची 64

# भूमिका

आज उत्तर भारत के अनेक भागों में बहुतेरी कलीसियाएँ स्थापित की जा रही हैं। एक तरफ जबकि परमेश्वर द्वारा किये जा रहे सारे कार्यों के लिए हम उसकी बड़ाई करते हैं, तो वहीं यह पूछना अच्छा है कि—"किस प्रकार की कलीसियाएँ स्थापित की जा रही हैं?" वे न तो बैपटिस्ट कलीसियाएँ अथवा पैंटिकॉस्टल कलीसियाएँ हैं, वे न तो गृह कलीसियाएँ अथवा सुव्यवस्थित कलीसियाएँ हैं; परन्तु क्या वे स्थायी फल उत्पन्न करने वाली गहरी जड़ों युक्त स्वस्थ कलीसियाएँ भी हैं?

यह संक्षिप्त पुस्तिका हमें यह सोचने में मदद करती है कि एक स्वस्थ कलीसिया कैसी दिखाई देती है। लेखक एक स्थानीय कलीसिया का पासबान है जो यहाँ अमरीकी सन्दर्भ में लिख रहा है। परिणामस्वरूप, यह पुस्तिका किन्हीं मामलों में संयुक्त राज्य अमरीका में पायी जाने वाली अस्वस्थ कलीसियाई परम्पराओं के प्रति व्यक्त एक प्रतिक्रिया है। अतः यह कलीसिया के लिए कोई पूर्ण मार्ग-दर्शिका अथवा सब कुछ नहीं है कि उसे कैसी होनी है और क्या करना है। उदाहरण के लिए, न तो प्रार्थना और न ही 'मिशन' 9 चिन्हों में से एक है, यद्यपि लेखक का इस बात पर यह विश्वास होगा कि इन दोनों का होना ज़रूरी है। न ही एक सिद्ध कलीसिया के लिए यह एक 9 चरणों वाली कोई प्रक्रिया है। बल्कि ये 9 चिन्ह वह हैं जिनकी कलीसियाई अगुवों द्वारा उनके हृदयों में पल रही अल्पकालिक सफलता के लिए अनदेखी की जाती है।

अतः यह एक पुस्तिका है जो उस किसी के लिए है, जो कि स्वस्थ कलीसियाओं के निर्माण में सहायता करना चाहता है। इस पुस्तिका का हिन्दी संस्करण भी '9चिन्ह वैबसाइट' पर अब उपलब्ध है, जिस पर अंग्रेजी में बहुत से अन्य उपयोगी साधन भी पाये जाते हैं। यदि आप के लिए संभव हो, तो कृपया www.9marks.org पर अवश्य जाएँ।

# परिचय

परमेश्वर ने अपनी दयालुता और अपने प्रेम में मात्र हमें मसीही होने के लिए नहीं बुलाया है। यद्यपि हम व्यक्तिगत रूप से पाप करते हैं, और व्यक्तिगत रूप से संसार से अलग होने के लिए बुलाए भी गए हैं, परन्तु इसी के साथ स्थानीय सभा में हमें एक साथ आने के लिए भी कहा गया है। इस सभा को 'नये नियम' में कलीसिया कहा गया है।

आज बाज़ार में अनेक पुस्तकें और परिपथ पर वक्ता यह दावा कर रहे हैं कि लगभग प्रत्येक कल्पनीय (मनोगम्य) गुण, आराधना-पद्धति, कमप्यूटर-कार्यक्रम, पुस्तक, ध्वनि-प्रणाली, गोष्ठी, धर्म-सेवा, शिक्षा, कार्यक्रम, समूह, दर्शन (शास्त्र), प्रणाली-विज्ञान, सिद्धान्त, सद्‌गुण, आत्मिक मुठभेड़, वाहन-पड़ाव नमूना अथवा प्रबन्ध संरचना एक सफल कलीसिया की कुंजी है। सही कौन है? आप यह कैसे कह सकते हैं कि कोई कलीसिया स्वस्थ है? आप यह कैसे कह सकते हैं कि आप की कलीसिया स्वस्थ है? आप बाइबल-सम्बन्धी, कायम रहने योग्य और परमेश्वर को महिमा प्रदान करने वाले विकास को प्रोत्साहित करने के लिए क्या कर सकते हैं?

यह छोटी-सी पुस्तक कलीसियाओं को परिवर्तित करने का एक साधन है। इसमें मैंने एक स्वस्थ कलीसिया के नौ विशिष्ट प्रमाण सुझाए हैं। परन्तु एक स्वस्थ कलीसिया के मात्र ये ही गुण नहीं। ये ही वे सब कुछ नहीं हैं जो कोई एक कलीसिया के विषय में कहना चाहेगा। यहाँ तक कि ये कलीसिया के विषय में आवश्यक एवं अति महत्त्वपूर्ण भी नहीं हैं। उदाहरण के लिए—बपतिस्मा तथा प्रभु-भोज एक बाइबल-सम्बन्धी कलीसिया के आवश्यक पहलू है; फिर भी यहाँ प्रत्यक्ष रूप से उनका उल्लेख नहीं किया गया है। यह इसलिए क्योंकि प्रत्येक कलीसिया वस्तुतः किसी न किसी प्रकार से इन्हें व्यवहार में लाना तो चाहती है। वे नौ गुण जिन पर यहाँ विचार किया गया है, वह वे चिह्न अथवा प्रमाण हैं जो एक कलीसिया को एक अलग श्रेणी में रख सकते हैं, जो एक दुरुस्त, स्वस्थ, बाइबल-आधारित कलीसिया को अपनी अनेक रुग्ण भगिनी कलीसियाओं से हटकर एक अलग पहचान दिला सकते हैं। जिन नौ चिह्नों का उल्लेख यहाँ किया गया है, वे आज अत्यन्त विरले ही देखने को मिलते हैं, और इसी कारण आज उन्हें हमारे ध्यान में लाने और हमारी कलीसियाओं में बढ़ावा देने की विशेष आवश्यकता है।

निःसन्देह, जिस प्रकार इस जीवन में कोई भी मसीही सिद्ध (पूर्ण) नहीं हैं, उसी प्रकार कलीसियाएँ भी सिद्ध नहीं हैं। यहाँ तक कि आज की सर्वश्रेष्ठ कलीसियाएँ भी अभीष्ट (आदर्श-स्वरूप) से बहुत दूर हैं। एक कलीसिया के समृद्ध होने का निश्चय

न तो सही राज-शासन, न साहसी प्रचार, न तो त्यागपूर्ण दान और न ही सिद्धान्त-संबंधी प्रामाणिकता कर सकती है। फिर भी, कोई भी कलीसिया अपनी वर्तमान स्थिति से अधिक स्वस्थ अवश्य हो सकती है। हमारे अपने जीवनों में, हम पाप पर पूर्णतः विजयी होते कभी नहीं दिखते, परन्तु परमेश्वर की वास्तविक संतान होने के कारण हम संघर्ष करना छोड़ नहीं देते। यह आवश्यक है कि कलीसियाएँ भी संघर्ष करना न छोड़े। मसीही लोग, विशेषकर चरवाहे (पासबान) तथा कलीसिया के अगुए, स्वस्थ कलीसिया को देखने की इच्छा रखें और उसके लिए परिश्रम भी करें। इस पुस्तिका का लक्ष्य मात्र इसी स्वास्थ्य को प्रोत्साहित करना है। दोनों तरफ, एक तरफ मैं लिखता हूँ, और दूसरी तरफ आप पढ़ते हैं जिससे कि परमेश्वर अपने लोगों के मध्य महिमा पाये।

यह आवश्यक है कि व्यावहारिकतावाद के प्रति हमारी अमरीकी लत, विशेषकर प्रत्यक्ष सफलता को एक साधारण, परमेश्वर की विश्वसनीयता के प्रति भरोसेमंद आस्था के द्वारा—विशेषकर उसकी आज्ञाकारिता में किसी अविलंब परिणाम की परवाह किये बिना—बदल दी जानी चाहिए। यह आवश्यक है कि श्रमिकों का सम्मान करने और उनको प्रोत्साहित करने के लिए जो श्रेणियाँ हों वह न केवल बढ़ती जनसंख्या वाले क्षेत्रों अथवा पुनर्जागृति के मध्य पाये जाने वाली हों, परन्तु यह थमी हुई अथवा घटती आबादी वाले शहरों, अथवा ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यरत ईमानदार सेवकों के लिए भी हों। हमें परमेश्वर के कार्यों को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है, जैसा कि विलियम केरी और अदोनीरम जड्सन के परिसर में देखा गया था, न कि केवल 'क्रूसेड' अथवा 'मिशन' में।

एक चेतावनी-युक्त टिप्पणीः हमारी कलीसियाओं के उद्देश्यों एवं व्यवहारों के इस पुनः अंशशोधन हेतु परिवर्तन तथा बाइबल-सम्बन्धी सुधार के प्रतिनिधि के रूप में, हमें धर्म-शिक्षणालयों (सेमिनरियों) पर तनिक भी आश्रित नहीं होना चाहिए। धर्म-शिक्षणालय (सेमिनरी)—चाहे साम्प्रदायिक अथवा अन्य ऐसी संस्थाएँ हैं जिनके अपने ही कार्यक्षेत्रों में से उनके अपने कर्मचारी हैं, और उनको उन्हीं के प्रति वफ़ादार रहना है; या फिर वे वहाँ से अपना रास्ता नापें। यह वैसा ही है जैसा होना चाहिए। इसलिए, जबकि हम अपनी कलीसियाओं को बदलने के लिए कार्य करते हैं—हमें एक लम्बे, धीमे और गहरे बदलाव के लिए कार्य करना है।

पुनः जबकि सर्वश्रेष्ठ कलीसियाएँ आदर्श से बहुत दूर हैं, इस कारण हमें काम करना कभी भी बन्द नहीं करना है। अधिक स्वस्थ कलीसिया के प्रति, जहाँ परमेश्वर के लोगों के मध्य उसकी महिमा हो, हम अपने विचारों में एक हैं। काश! इस पुस्तक का उपयोग उसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए हो।

# 1

# व्याख्यात्मक उपदेश

I. व्याख्यात्मक उपदेश की परिभाषा

II. व्याख्यात्मक उपदेश मूलतः कोई शैली नहीं

III. परमेश्वर के वचन के प्रति आज्ञाकारिता—न कि उपदेशक का अपना निजी ज्ञान

IV. परमेश्वर ने सदैव अपने लोगों को अपने वचन के द्वारा सृजा है

V. परमेश्वर के प्रचारित वचन की केन्द्रीयता

VI. पुनर्विचार के लिए प्रश्न

# 1

# व्याख्यात्मक उपदेश

व्याख्यात्मक उपदेश की परिभाषा

आरम्भ करने का स्थान है, परमेश्वर का हमारे साथ आरम्भ—उसका हमसे बोलना। हमें आत्मिक स्वास्थ्य इसी प्रकार प्राप्त हुआ है, और इसी प्रकार से हमारी कलीसियाएँ भी स्वास्थ्य प्राप्त करेंगी। वैसे तो यह एक कलीसिया में किसी के लिए भी जो नेतृत्व में हो आवश्यक है, परन्तु कलीसिया के चरवाहे के लिए विशेष रूप से व्याख्यात्मक प्रचार एक वचनबद्धता है जो प्रचार का एक सबसे पुराना तरीका है। यह वह प्रचार है जिसका मुख्य उद्देश्य पवित्र शास्त्र के किसी परिच्छेद-विशेष की व्याख्या करना है कि उसमें क्या कहा गया है, तथा ध्यानपूर्वक इसके अर्थ को समझना और सभा में उसको लागू करना होता है (देखिए नहेम्याह 8:8)। बेशक, इसके अलावा, प्रचार के अन्य दूसरे प्रकार भी हैं। उदाहरण के लिए, प्रासंगिक उपदेश, जिसके अंतर्गत पवित्र शास्त्र की सभी शिक्षाएँ एक ही विषय पर केंद्रित कर ली जाती हैं, जैसे—'प्रार्थना' अथवा 'भेंट' इत्यादि। जीवनी-संबंधी उपदेश में, उदाहरण के लिए, बाइबल के किसी एक पात्र को ले लिया जाता है, और उसे परमेश्वर के अनुग्रह के प्रदर्शन के रूप में और आशा तथा निष्ठा के उदाहरण के रूप में दिखाया जाता है। परन्तु व्याख्यात्मक उपदेश कुछ और ही है—यह परमेश्वर के वचन के एक विशेष भाग का स्पष्टीकरण और उसकी प्रयुक्ति है।

व्याख्यात्मक उपदेश मूलतः कोई शैली नहीं

व्याख्यात्मक प्रचार अथवा उपदेश पवित्र शास्त्र के अधिकार में विश्वास रखता और उसको मानता है, परन्तु यह इससे भी बढ़कर कुछ और है। व्याख्यात्मक उपदेश के प्रति वचनबद्धता, परमेश्वर के वचन को सुनने के प्रति वचनबद्धता है। पुराने नियम के नबियों और नये नियम के प्रेरितों को भी जाकर केवल बोलने का अधिकार नहीं दिया गया था, परन्तु एक विशेष सन्देश को प्रचार करने का; अतः मसीही प्रचारकों को भी आज यह अधिकार है कि वे जब भी परमेश्वर के वचन का प्रचार करें, केवल परमेश्वर की ओर से बोलें। अतः व्याख्यात्मक प्रचार के प्रचारकों का अधिकार पवित्र शास्त्र से आरम्भ होकर पवित्र शास्त्र में ही समाप्त होता है। कभी-कभी लोग व्याख्यात्मक प्रचार और अपने चहेते प्रचारक की शैली को लेकर चकरा सकते हैं, परन्तु मूलतः यह किसी एक शैली का मामला नहीं है। जैसा कि अनेक लोगों का मानना है कि अन्ततः व्याख्यात्मक उपदेश यह नहीं कि हम कैसे कहते अथवा क्या कहते हैं, परन्तु यह कि जो हमें कहना है उसका निर्णय किस प्रकार लेते हैं। यह किसी रूप-विशेष के द्वारा चिन्हित नहीं है, परन्तु बाइबल-आधारित विषय-सामग्री द्वारा।

परमेश्वर के वचन के प्रति आज्ञाकारिता—न कि उपदेशक का अपना निजी ज्ञान

हो सकता है कि कोई व्यक्ति आनन्दपूर्वक परमेश्वर के वचन के अधिकार को स्वीकार कर ले और यहाँ तक कि वह बाइबल की प्रामाणिकता में भी विश्वास कर ले; फिर भी यदि वह व्यक्ति व्यवहार में (चाहे इच्छा होते हुए या न होते हुए) व्याख्यात्मक प्रचार नहीं करता, तो वह कभी भी अपनी जानकारी से अधिक प्रचार नहीं कर पायेगा। एक प्रचारक पवित्रशास्त्र का कोई अंश लेकर वास्तव में बिना उस परिच्छेद के बिन्दु को समझाए सभा को किसी महत्त्वपूर्ण विषय पर प्रोत्साहित कर सकता है। परन्तु जब ऐसा होता है तो प्रचारक और सभा पवित्रशास्त्र में से केवल वही सुनते हैं जिसे वे पहले से जानते हैं।

इसके विपरीत जब हम पवित्र शास्त्र के परिच्छेद का प्रचार व्याख्यात्मक रूप से उसके सार को उपदेश के रूप में लेते हुए उसके ही सन्दर्भ में करते हैं, तब हम परमेश्वर से वह सुनते हैं जिसके विषय हमने आरम्भ में सोचा भी नहीं था।

पश्चाताप के लिए पहली बुलाहट से लेकर हमारे जीवन के उस क्षेत्र तक जिसके विषय में पवित्र आत्मा ने अभी हाल ही में दोषी ठहराया है, हमारा सम्पूर्ण उद्धार परमेश्वर को सुनने में है जिसका कि हम उसे सुनने से पहले अनुमान भी न लगा पाते। परमेश्वर के वचन के प्रति यही व्यावहारिक समर्पण एक प्रचारक की सेवा में प्रकट होना चाहिए। यहाँ गलती न करें: क्योंकि अन्ततः यह कलीसिया-सभा का दायित्व है कि वही सुनिश्चित करे कि यह ठीक है (देखें कि कलीसिया के प्रति यह दायित्व मत्ती 18 में यीशु अथवा 2 तीमुथियुस 4 में पौलुस लेता है)। कलीसिया कभी भी झुण्ड के आत्मिक निरीक्षण का दायित्व किसी ऐसे व्यक्ति को न सौंपे जो व्यावहारिक रूप से परमेश्वर के वचन को सुनने और सिखाने में वचनबद्ध न दिखाई देता हो। क्योंकि ऐसा करना अनिवार्य रूप से कलीसिया के विकास को रोकना होगा, और वास्तव में यह कलीसिया को केवल चरवाहे (पासबान) के स्तर तक ही विकसित करने के लिए प्रोत्साहित करेगा।

ऐसी दशा में कलीसिया परमेश्वर के मन के अनुरूप होने की अपेक्षा धीरे-धीरे पासबान (पास्टर) के मत के अनुकूल हो जाएगी।

परमेश्वर ने सदैव अपने लोगों को अपने वचन के द्वारा सृजा है

परमेश्वर के लोग हमेशा परमेश्वर के वचन द्वारा सृजे गए हैं। सृष्टि (उत्पत्ति 1) से लेकर अब्राम को बुलाए जाने (उत्पत्ति 12) तक, सूखी हड्डियों की घाटी के दर्शन (यहेजकेल 37) से जीवित वचन के आगमन तक, परमेश्वर ने हमेशा अपने लोगों को अपने वचन के द्वारा ही सृजा है। जैसा कि पौलुस ने रोमियों को लिखा, "अतः विश्वास सुनने से, और सुनना मसीह के वचन के द्वारा होता है" (10:17)। या, जैसा पौलुस ने कुरिंथियों को लिखा, "क्योंकि जब परमेश्वर के ज्ञान के अनुसार यह संसार अपने ज्ञान से परमेश्वर को न जान सका, तो परमेश्वर को यह अच्छा लगा कि इस

प्रचार की मूर्खता के द्वारा विश्वास करने वालों का उद्धार करे" (1 कुरिंथियों 1:21)।

सही व्याख्यात्मक उपदेश प्रायः किसी कलीसिया के विकास का उद्‌गम होता है। मार्टिन लूथर के अनुभव के अनुसार, परमेश्वर के वचन पर इस प्रकार का सुविचारित ध्यान ही सुधारांदोलन का प्रारम्भ था। हमें भी ऐसी कलीसियाएँ होने के लिए वचनबद्ध होना चाहिए जो सदैव परमेश्वर के वचन के अनुसार सुधारी जा रही हैं।

एक बार जब मैं लंदन में प्यूरिटनवाद विषय पर दिन भर का एक 'सेमिनार' ले रहा था, तो मैंने ज़िक्र किया कि कई बार प्यूरिटन-सन्देश दो घण्टे के भी हुआ करते थे। इस पर एक व्यक्ति ने ज़ोर से हाँफकर पूछा, "तो फिर इससे आराधना के लिए कितना समय बचता था?" मान्यता यह थी कि परमेश्वर के वचन का प्रचार सुनना आराधना का भाग नहीं था। मैंने उत्तर दिया कि उस समय अनेक अँग्रेज़ प्रोटेस्टेंट मसीही अपनी भाषा में परमेश्वर का वचन सुनने का विचार करते और आराधना के उस महत्त्वपूर्ण भाग को अपने जीवनों के द्वारा प्रकट करते थे। चाहे उनके पास एक साथ मिलकर गाने का समय था या नहीं, यह कोई ख़ास बात नहीं हुआ करती थी।

परमेश्वर के प्रचारित वचन की केन्द्रीयता

आवश्यक है कि हमारी कलीसियाएँ हमारी आराधना में वचन की केन्द्रीयता को दुबारा प्राप्त करें। परमेश्वर के वचन को सुनने और उसके अनुकूल प्रतिक्रिया व्यक्त करने में स्तुति तथा धन्यवाद, पापांगीकार तथा उद्‌घोषणा, सभी कुछ सम्मिलित हो सकते हैं, और इनमें से कुछ भी गीत के रूप में हो सकता है, परन्तु इनमें से कोई आवश्यक भी नहीं। संगीत पर आधारित एक कलीसिया—चाहे संगीत किसी भी शैली का क्यों न हो—वह खिसकती रेत पर बनी हुई कलीसिया है। उपदेश देना पासबानी का एक मूल तत्त्व है। अपने पासबान (पास्टर) के लिए प्रार्थना करें कि वह पवित्र शास्त्र का अध्ययन बड़े ध्यानपूर्वक, परिश्रम और गंभीरता के साथ करने के लिए वचनबद्ध हो, और जिससे कि परमेश्वर उसे वचन को समझने, उसको उसके अपने जीवन और अपनी कलीसिया में लागू करने में उसकी अगुवाई करे (देखें लूका 24:27; प्रेरितों 6:4; इफिसियों 6:19, 20)। यदि आप एक सेवक हैं तो इन विषयों पर अपने स्वयं के लिए प्रार्थना करें। उन दूसरों के लिए भी जो वचन का प्रचार करते और शिक्षा देते हैं, प्रार्थना करें। अन्त में प्रार्थना करें कि हमारी कलीसियाएँ दिए गए व्याख्यात्मक उपदेश को सुनने के लिए वचनबद्ध हों ताकि हरेक कलीसिया की कार्य-सूची को शीघ्रता से पवित्र शास्त्र में पायी जाने वाली परमेश्वर की कार्य-सूची के अनुसार अंतिम रूप दिया जा सके। व्याख्यात्मक उपदेश के प्रति वचनबद्धता एक स्वस्थ कलीसिया की निशानी है।

## पुनर्विचार के लिए प्रश्न

1. नहेम्याह 8:7, 8 पढ़ें। व्यवस्था की पुस्तक के पाठ के समय लेवी (वेदी-सेवक) जो लोगों के लिए करते थे, उसके विषय में बाइबल क्या कहती है? पद 12 में लिखा है कि सभा के पश्चात् सब लोग उत्सव मनाते हुए चले गए। इस परिच्छेद के अनुसार, वे उत्सव क्यों मना रहे थे?

2. लेखक के अनुसार व्याख्यात्मक उपदेश की परिभाषा परमेश्वर के वचन के एक भाग-विशेष का स्पष्टीकरण और उसकी प्रयुक्ति है। इस परिभाषा को आप पुनः अपने शब्दों में लिखें। एक व्याख्यात्मक उपदेश अन्य दूसरे उपदेशों—प्रासंगिक तथा जीवनी-संबंधी उपदेशों—से किस प्रकार भिन्न हैं?

3. प्रेरितों के कार्य 20:27 में पौलुस इफिसुस के लोगों से कहता है कि उसने उन्हें "परमेश्वर की सम्पूर्ण इच्छा" को सिखाने के लिए परिश्रम किया है। यह मानते हुए कि कलीसिया के अगुवे होने के कारण आज यही कार्य हमें अपने लोगों के लिए करना है कि किस प्रकार अपने लोगों के मध्य परमेश्वर की सम्पूर्ण इच्छा को प्रस्तुत करने के लिए अपने परिश्रम में व्याख्यात्मक उपदेश हमारे लिए लाभदायक हो सकता है? यदि हम "परिच्छेद के विषय को प्रचार के विषय के रूप में" नहीं लेते तो इससे कौन-सा खतरा हो सकता है?

4. उत्पत्ति 1 से नये नियम तक, परमेश्वर ने हमेशा अपने लोगों को अपने वचन के द्वारा ही सृजा है। रोमियों 10:17 तथा 1कुरिंथियों 1:21 पढ़े। परमेश्वर अपने लोगों को मसीह में उद्धार दिलाने वाले विश्वास तक लाने के लिए किसका प्रयोग करता है? यहाँ किस सम्मान के विषय में कहा गया है जिसमें हमें परमेश्वर के वचन को अपनी कलीसिया में थामे रखना हे? यह सम्मान हमारे प्रचार में स्वयं को व्यावहारिक रूप से किस प्रकार दिखा सकता है?

# 2

# बाइबल-सम्बन्धी धर्मविज्ञान

I. "सही धर्मसिद्धान्त"

II. एकता, विविधता और उदारता

III. जटिल अथवा विवादात्मक सिद्धान्तों से निपटना

IV. परमेश्वर की प्रभुसत्ता (संप्रभुता) का विरोध

V. अगुवों को परमेश्वर की संप्रभुता स्वीकार करना है

VI. पुनर्विचार के लिए प्रश्न

# 2

# बाइबल-सम्बन्धी धर्मविज्ञान

कलीसिया के स्वास्थ्य के लिए व्याख्यात्मक उपदेश महत्त्वपूर्ण है। फिर भी हर तरीका, चाहे वह कितना भी अच्छा क्यों न हो, दुरुपयोग के लिए खुला है; और इसीलिए यह उसके लिए आवश्यक है कि वह परीक्षण के लिए भी खुला हो। हमारी कलीसियाओं में हमारी चिंता केवल यह नहीं होनी चाहिए कि हमें कैसे शिक्षा दी जा रही है, परन्तु यह भी कि हमें क्या शिक्षा दी जा रही है। हमें खरेपन को हृदय में सजोए रखना है, विशेषकर बाइबल के परमेश्वर और हमारे प्रति उसके व्यवहार के सन्दर्भ में।

"सही धर्म-सिद्धान्त"

"ख़रापन" एक पुराने ढर्रे का शब्द है। पौलुस द्वारा तीमुथियुस और तीतुस को लिखी गई उसकी पत्रियों में "खरा" का अर्थ है—भरोसेमंद, विशुद्ध अथवा विश्वसनीय। मूलरूप से यह चिकित्सा-जगत से आया हुआ एक प्रतीक है जिसका अर्थ है—भला-चंगा अथवा स्वस्थ। 1 तीमुथियुस 1 में हम पढ़ते हैं कि खरे सिद्धान्त सुसमाचार के द्वारा बनाए गए हैं और वे दुष्टता और पाप के विरुद्ध हैं। 1 तीमुथियुस 6:3 में तो पौलुस ने और भी स्पष्ट रूप से "झूठी शिक्षाओं" और "हमारे प्रभु यीशु मसीह के ठोस वचन तथा भक्ति के अनुसार शिक्षा" को लाकर आमने-सामने रख दिया है। अतः तीमुथियुस को लिखी अपनी दूसरी पत्री में "पौलुस तीमुथियुस को प्रोत्साहित करता है कि, "जो खरे वचन तूने मुझसे सुने हैं, उनको ... अपना आदर्श बनाए रख" (2 तीमुथिसुस 1:13)। पौलुस तीमुथियुस को सचेत करता है कि "ऐसा समय आएगा जब वे खरी शिक्षा को सहन नहीं करेंगे, परन्तु अपने कानों की खुजलाहट के कारण अपनी अभिलाषाओं के अनुसार वे अपने लिए बहुत से गुरु बटोर लेंगे (2 तीमुथियुस 4:3)।

जब पौलुस ने एक अन्य युवा पासबान, तीतुस को लिखा, तो उसकी चिंता यहाँ भी कुछ इसी प्रकार की थी। पौलुस तीतुस से कहता है कि वह जिस किसी को भी एक प्राचीन के रूप में नियुक्त करे वह "उस विश्वास योग्य वचन पर स्थिर रहे जो धर्मोपदेश के अनुसार है, जिससे कि वह खरी शिक्षा देकर लोगों को प्रोत्साहित करने और विरोधियों का मुँह बंद करने में भी समर्थ हो" (तीतुस 1:9)। पौलुस तीतुस से आग्रह करता है कि वह झूठे शिक्षकों को फटकारे "कि वे विश्वास में पक्के हो जाएँ" (तीतुस 1:13)। पौलुस तीतुस को यह कहकर आदेश देता है, "तू ऐसी बातें कहा कर जो खरी शिक्षा के अनुसार है" (तीतुस 2:1)।

एकता, विविधता और उदारता

यदि हम वह सब कुछ तैयार कर सकें जिससे खरी शिक्षा उत्पन्न होती है, तो हम सम्पूर्ण बाइबल की रचना पुनः कर सकते हैं। परन्तु व्यावहारिक रूप से ऐसे मामलों पर प्रत्येक कलीसिया को इसका निर्णय लेना होता है जिसमें पूर्णरूप से एक मत होना नितान्त आवश्यक है—इसमें या तो सीमित असहमति हो सकती है, या फिर पूर्ण स्वतंत्रता भी हो सकती है।

वॉशिंगटन, डीसी, की जिस कलीसिया के संग मैं सेवारत हूँ, उसकी सदस्यता लेने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए यह जरूरी है कि वह यह विश्वास करता हो कि उद्धार केवल यीशु मसीह द्वारा क्रूस पर किये गए कार्य द्वारा ही संभव है। हम यही विश्वास (अथवा काफी कुछ इसी प्रकार की मान्यता को) विश्वासी के बपतिस्मे और कलीसिया के प्रशासन में भी स्वीकार करते हैं। उद्धार के लिए इन अंतिम दो विषयों में एकरूपता आवश्यक नहीं; परन्तु उन पर आपसी सहमति—व्यावहारिक रूप से सहायक, तथा कलीसियाई जीवन के लिए स्वास्थ्यवर्द्धक, दोनों है।

हम कुछ विषयों पर, जो कि न तो उद्धार के लिए और न ही कलीसिया के व्यावहारिक जीवन के लिए आवश्यक हैं, असहमति स्वीकार कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, यद्यपि हम सभी इस बात के लिए सहमत हैं कि मसीह दुबारा आएगा, परन्तु इसमें आश्चर्य नहीं कि उसके द्वितीय आगमन के समय को लेकर हममें आपसी असहमति है। हम इससे भी कम महत्त्व तथा अस्पष्ट मसलों पर पूरी-पूरी आजादी के साथ अपनी बात रख सकते हैं—जैसे कि सशस्त्र विरोध के औचित्य और इब्रानियों की पत्री के स्रोत को लेकर।

इन सभी विषयों को लेकर, सिद्धान्त स्पष्ट होना चाहिएः जितना निकट हम अपने विश्वास के केन्द्र तक पहुँचते हैं, उतना ही अधिक हम विश्वास के प्रति एक संयुक्त दृष्टिकोण में व्यक्त अपनी एकता को देखने की अपेक्षा करते हैं। आरंभिक कलीसिया ने इसे आवश्यक में एकता, अनावश्यक में असमानता, परन्तु सब में सद्भाव के रूप में व्यक्त किया।

जटिल अथवा विवादात्मक सिद्धान्तों से निपटना

खरी शिक्षा में उन सिद्धान्तों के प्रति जो प्रायः भुला दिए जाते किन्तु स्पष्ट रूप से बाइबल आधारित हैं, एक स्पष्ट वचनबद्धता पायी जाती है। यदि हमें बाइबल के खरे सिद्धान्त सीखना है, तो हमें सिद्धान्तों के विषय को स्वीकार करना होगा जो कठिन अथवा यहाँ तक कि फूट डालने वाले भी हो सकते हैं; परन्तु वे हमारे मध्य परमेश्वर के कार्य को समझने के मूल आधार हैं। उदाहरण के लिए, चुनाव के विषय में बाइबल सम्बन्धी सिद्धांत अत्यंत जटिल अथवा भ्रामक समझकर टाल दिया जाता है। परन्तु इससे इनकार नहीं किया जा सकता कि यह सिद्धांत बाइबल-सम्बन्धी है,

तथा इसी के साथ-साथ महत्त्वपूर्ण भी है। जबकि इसमें उलझाव भी हो सकते हैं जो हम पूरी तरह से समझ न पाएँ, परन्तु यह कोई छोटी बात नहीं है कि हमारा उद्धार स्वयं हमसे नहीं, बल्कि परमेश्वर से आता है। अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न जिनका बाइबल उत्तर देती है, उनकी भी अनदेखी हुई है।

- क्या लोग बुनियादी तौर से ख़राब या अच्छे हैं? क्या उनको केवल प्रोत्साहन और बढ़े हुए आत्म-सम्मान की आवश्यकता है, अथवा उन्हें क्षमा और नए जीवन की आवश्यकता है?
- मसीह यीशु ने क्रूस पर मरने के द्वारा क्या किया? क्या उसने एक विकल्प को संभव किया अथवा वह हमारा स्थानापन्न (एवज़) था?
- किसी के मसीही बनने पर क्या होता है?
- यदि हम मसीही हैं, तो क्या हमें यह निश्चय हो सकता है कि परमेश्वर निरंतर हमारी देख-भाल करता रहेगा? यदि ऐसा है तो क्या उसका यह कार्य हमारी निष्ठा के कारण है, अथवा उसकी?

ये सभी प्रश्न मात्र किताबी धर्म-विज्ञानियों के लिए अथवा युवा सेमिनरी-छात्रों के लिए ही महत्त्वपूर्ण नहीं हैं। वे प्रत्येक मसीही के लिए महत्त्वपूर्ण हैं। हममें से जो रखवाले (पास्टर) हैं, वे जानते हैं कि यदि इनमें से किसी प्रश्न का उत्तर बदल जाए तो हम अपने लोगों की देख-भाल कितने भिन्न प्रकार से करने लग जाएँगे। पवित्र शास्त्र के प्रति निष्ठा की यह माँग है कि हम इन मुद्दों पर बड़ी सफ़ाई और अधिकार के साथ बोलें।

परमेश्वर की प्रभुसत्ता (संप्रभुता) का विरोध

इस बात में हमारी यह समझ कि बाइबल परमेश्वर के विषय में क्या सिखाती है, बड़ी निर्णायक है। बाइबल का परमेश्वर सृष्टिकर्ता तथा प्रभु है; फिर भी उसकी संप्रभुता को कभी-कभी नकार दिया जाता है, यहाँ तक कि कलीसिया के भीतर भी। विश्वासी मसीहियों के लिए सृष्टि अथवा उद्धार में परमेश्वर की संप्रभुता के विचार का प्रतिरोध करना वास्तव में पुण्य-अंधविश्वास के संग खेलना है। अनेक मसीहियों के पास परमेश्वर की संप्रभुता के विषय में सच्चे प्रश्न हो सकते हैं; परन्तु परमेश्वर की संप्रभुता का लम्बे अर्से तक इनकार करते रहना तथा उस पर अड़े रहना हमारे लिए चिंता का विषय होना चाहिए। ऐसे व्यक्ति को बपतिस्मा देना शायद एक ऐसे हृदय का बपतिस्मा हो सकता है जो कुछ हद तक अब भी अविश्वासी है। ऐसे व्यक्ति को (कलीसिया की) सदस्यता देना संभवतः उनके साथ ऐसे पेश आना है, मानो वे परमेश्वर में विश्वास करते हों, जबकि वास्तव में वे ऐसे हैं नहीं।

अगुवों को परमेश्वर की संप्रभुता स्वीकार करना है

इस प्रकार का विरोध जितना ख़तरनाक किसी मसीही में है, उससे कहीं अधिक हानिकारक यह एक कलीसिया के अगुवे में है। एक अगुवे के रूप में किसी ऐसे व्यक्ति को नियुक्त करना जो परमेश्वर की प्रभुसत्ता पर संदेह करता हो अथवा जो इन विषयों पर दी जाने वाली बाइबल-सम्बन्धी शिक्षा का बड़ी गंभीरतापूर्वक ग़लत अर्थ लगाता हो, उसे नमूने के रूप में ऐसा व्यक्ति प्रस्तुत करना है जो परमेश्वर में विश्वास करने के लिए पूर्णतः अनिच्छुक हो सकता है। इस प्रकार की नियुक्ति तो कलीसिया में बाधा उत्पन्न करेगी ही।

प्रायः आज हमारी संस्कृति हमें सुसमाचार-प्रचार को विज्ञापन में बदलने के लिए प्रोत्साहित करती है और आत्मा के कार्य को विपणन (मार्केटिंग) की शब्दावली में समझाती है। कभी-कभी तो स्वयं परमेश्वर को ही मनुष्य के स्वरूप में बदल दिया जाता है। ऐसे समय में एक स्वस्थ कलीसिया को चाहिए कि वह अगुवों के लिए प्रार्थना करने में विशेष रूप से सावधान रहे जिनके पास परमेश्वर की संप्रभुता की बाइबल-सम्बन्धी तथा अनुभवात्मक पकड़ है और अपने पूर्ण गौरव में सही शिक्षा के प्रति बाइबल-सम्बन्धी एवं पूर्ण वचनबद्धता है। एक स्वस्थ कलीसिया एक व्याख्यात्मक प्रचार और बाइबल-सम्बन्धी परमेश्वर-ज्ञान से पहचानी जाती है।

## पुनर्विचार के लिए प्रश्न

1. 1 तीमुथियुस 6:3-5 पढ़ें। प्रेरित पौलुस उस व्यक्ति का वर्णन जो "झूठी शिक्षा" देता है, किस प्रकार करता है? आप ऐसा क्यों सोचते हैं कि प्रेरित पौलुस के लिए यह अत्यावश्यक था कि तीमुथियुस अपने लोगों को "सही उपदेश" और परमेश्वरीय शिक्षा दे?

2. लेखक अनेक सिद्धान्तों का उल्लेख करता है कि एक व्यक्ति जहाँ वह सेवा करता है उस कलीसिया का सदस्य होने के लिए उन पर विश्वास करे। वह अनेक मुद्दों की सूची भी बनाता है जहाँ सदस्य विश्वास की स्वतंत्रता का पर्याप्त अनुभव करे। एक व्यक्ति को आप की कलीसिया का सदस्य बनने के लिए किस बात पर विश्वास करने की आवश्यकता है? वे विश्वास आप के क्षेत्र में आप की कलीसिया को दूसरों से किस प्रकार भिन्नता प्रदान करते हैं? आप की कलीसिया किन मुद्दों पर कुछ स्वतन्त्रता प्रदान करती है?

3. पवित्र शास्त्र में पाये जाने वाले कुछ सिद्धांतों को प्रायः अनदेखा कर दिया जाता है, क्योंकि उन्हें कठिन विवादास्पद अथवा यहाँ तक कि विभाजन करने वाले मान लिया गया है। क्या यह सम्भावित विवाद हमारी कलीसियाओं में इन सिद्धांतों

के विषय में वार्तालाप तथा ताड़ना पर बातचीत न करने का अच्छा कारण है? क्यों अथवा क्यों नहीं?

4. पृष्ठ 19 पर लेखक ने चार प्रश्नों की सूची दी है जिस पर प्रायः उस प्रकार ध्यान नहीं दिया गया जैसा कि ध्यान दिया जाना चाहिए। आप के विचार से बाइबल इन प्रश्नों का उत्तर किस प्रकार देती है? अपने उत्तरों के लिए पवित्र शास्त्र का संदर्भ दें।

5. प्रेरित पौलुस तीतुस 1:9 में लिखता है कि कलीसिया-सभा का अगुवा "विश्वास-योग्य वचन पर, जैसा उसे सिखाया गया है, स्थिर रहे।" क्या आप को लगता है कि एक पास्टर अथवा अगुवे के लिए उद्धार में परमेश्वर की संप्रभुता को समझना और स्वीकार करना महत्त्वपूर्ण है? कलीसिया के उस अगुवे के लिए जो इस विषय में परमेश्वर की संप्रभुता पर संदेह करता अथवा बाइबल की शिक्षा का गलत अर्थ निकालता है, क्या खतरा है?

# 3

# सुसमाचार की बाइबल-संबंधी व्याख्या

I. सुसमाचार मसीहियत का मानस है

II. परमेश्वर, मनुष्य, मसीह, प्रतिक्रिया

III. सुसमाचार उद्धार का एक आमूल प्रस्ताव है

IV. पुनर्विचार के लिए प्रश्न

# 3

# सुसमाचार की बाइबल-संबंधी व्याख्या

सुसमाचार मसीहियत का मानस है

कलीसियाई जीवन के एक क्षेत्र-विशेष में बाइबल-सम्बन्धी धर्मविज्ञान का होना कि मसीह यीशु के शुभ-समाचार (सुसमाचार) के विषय में हमारी क्या समझ है, विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है। सुसमाचार मसीहियत का मानस है, और इसीलिए उसे हमारे विश्वास का भी मानस होना चाहिए। आवश्यक यह है कि मसीही होने के नाते हम प्रार्थना करें कि कलीसियाई जीवन में अधिक से अधिक हमारा ध्यान उद्धार के अद्‌भुत सुसमाचार पर हो जो कि मसीह के द्वारा है, बजाए इसके कि किसी और बात पर। एक स्वस्थ कलीसिया ऐसे लोगों से परिपूर्ण होती है, और सुसमाचार के लिए एक हृदय रखने का अर्थ सत्य के लिए हृदय रखना होता है—अर्थात परमेश्वर के स्वयं की प्रस्तुति, हमारी आवश्यकता, मसीह के उपाय और हमारी अपनी जिम्मेदारी के लिए।

परमेश्वर, मनुष्य, मसीह, प्रतिक्रिया

जब मैं किसी को सुसमाचार सुनाता हूँ तो चार बिंदुओं—परमेश्वर, मनुष्य, मसीह, प्रतिक्रिया को स्मरण रखने का प्रयास करता हूँ। क्या मैंने इस व्यक्ति को हमारे पवित्र परमेश्वर एवं सर्वसत्ताधारी सृष्टिकर्ता के विषय में बताया है? क्या मैंने यह स्पष्ट किया है कि हम मानव के रूप में एक विलक्षण मिश्रण हैं—परमेश्वर के स्वरूप में सृजे गए प्राणी परन्तु फिर भी पतित, पापमय और उससे पृथक किये गए। क्या जिस व्यक्ति से मैं बात कर रहा हूँ, वह यह जानता है कि मसीह कौन है—परमेश्वर-मानव, मनुष्य तथा परमेश्वर के मध्य एकमात्र मध्यस्थ, हमारा प्रतिस्थानापन्न तथा मृतकों में से पुनर्जीवित प्रभु? तब अन्त में यहाँ तक कि यदि मैंने उससे यह सब कुछ बता दिया है, तो क्या वह यह समझता है कि उसे सुसमाचार का उत्तर देना ही है, कि उसे इस सन्देश पर विश्वास करना ही है और अपने आत्म-केन्द्रित जीवन एवं पाप से फिरना है?

सुसमाचार उद्धार का एक आमूल प्रस्ताव है

गैर-मसीहियों को योगात्मक रूप से सुसमाचार देना जो उनके स्वाभाविक अपेक्षा (आनन्द, सुख, शान्ति, प्राप्ति, आत्म-सम्मान, प्रेम) के अनुरूप हों, आंशिक रूप से सत्य है—मात्र आंशिक रूप से। जैसा कि जे. आई. पैकर का कथन है, "एक अर्द्ध-सत्य, पूर्ण-सत्य का स्वाँग भर लेने के उपरांत पूर्ण असत्य बन जाता है।" मूलतः प्रत्येक व्यक्ति को क्षमा की आवश्यकता है। हमें आत्मिक जीवन की आवश्यकता है। सुसमाचार को इसके मौलिक रूप से कम करके प्रस्तुत करना नकली मन-परिवर्तन तथा बड़ी संख्या में अर्थहीन कलीसियाई सदस्यता को निमन्त्रण

देना है, जिसमें से ये दोनों ही प्रकार के लोग विश्व में सुसमाचार-प्रचार को और अधिक कठिन बना देते हैं।

घरों, कार्यालयों और पड़ोसों में फैले हमारे कलीसियाई सदस्य इसी दिन, रविवार को, मसीहियों के साथ समय व्यतीत करने की अपेक्षा गैर-मसीहियों के संग अधिक से अधिक संख्या में और वह भी लंबे समय के लिए मिलने जाते हैं। हममें से प्रत्येक के पास मसीह में उद्धार की जबरदस्त जानकारी है। हम किसी अन्य वस्तु के लिए इसमें अदला-बदली (घाटे का सौदा) न करें। आइए, आज हम इसके विषय में बताएँ! पिछली पीढ़ी के महान मसीही अगुवे तथा प्रथम बैपटिस्ट कलीसिया, डैलस, टैक्सस, के पासबान जॉर्ज डब्ल्यू ट्रूएट, का कथन है:

सबसे बड़ा आरोप जो तुम
कलीसिया के विरुद्ध लगा सकते हो...
वह यह कि कलीसिया में
मानव-आत्माओं के लिए मनोवेग
एवं करुणा का अभाव है। यदि इसमें
भटकी हुई आत्माओं के लिए संवेदनाएँ
नहीं उमड़तीं, और वह बाहर जाकर
खोई हुई आत्माओं को खोजकर उन्हें
मसीह यीशु के ज्ञान की ओर निर्दिष्ट
नहीं करतीं, तो कलीसिया किसी
नैतिक क्लब से तनिक भी बेहतर नहीं।

एक स्वस्थ कलीसिया सुसमाचार को जानती है, और एक स्वस्थ कलीसिया ही उसे दूसरों में बाँटती है।

## पुनर्विचार के लिए प्रश्न

1. लेखक का यह विश्वास है कि मसीही होने के नाते कलीसियाई जीवन में हमारा ध्यान अधिक से अधिक उद्धार के अद्‌भुत सुसमाचार पर हो जो मसीह के द्वारा है, बजाए इसके कि किसी अन्य बात पर। क्या आप इससे सहमत हैं? (पढ़ें 1 कुरिंथियों 2:2)। मसीह यीशु का उपदेश इतना महत्त्वपूर्ण क्यों है?

2. सुसमाचार की बाइबल-सम्बन्धी समझ प्राप्त करने के लिए किसी व्यक्ति को परमेश्वर के बारे में क्या समझने की आवश्यकता है? एक व्यक्ति को मनुष्य तथा पाप में उसकी दशा के विषय में क्या समझने की आवश्यकता है? एक व्यक्ति के लिए

मसीह के विषय में क्या समझना अनिवार्य है? मरकुस 1:15 में, मसीह यीशु के अनुसार सुसमाचार के प्रति मनुष्य की क्या प्रतिक्रिया होनी चाहिए? प्रतिक्रिया के प्रत्येक इन दोनों प्रमुख भागों में क्या-क्या सम्मिलित है?

3. लेख लिखता है कि—"सुसमाचार को इसके मौलिक रूप से कम करके प्रस्तुत करना नकली मन-परिवर्तन तथा बड़ी संख्या में अर्थहीन कलीसियाई सदस्यता को निमंत्रण देना है।" सुसमाचार का यह "मौलिक" उपदेश क्या है? गैर-मसीहियों को प्रसन्न करने और उनको अपने बारे में अच्छा महसूस कराने के लिए कभी-कभी प्रस्तुत किया जाने वाला सुसमाचार इससे किस प्रकार भिन्न है?

4. आप की कलीसिया पृष्ठ 24 पर दी गई जॉर्ज डब्ल्यू ट्रूएट की चुनौती का मूल्यांकन किस प्रकार करती है? आप की कलीसिया भटके हुए लोगों के मध्य मसीह द्वारा उद्धार के सुसमाचार को बाँटने के लिए कितनी संवेदनशील है?

# 4

# मन-परिवर्तन की बाइबल-सम्बन्धी व्याख्या

I. पश्चाताप और विश्वास

II. मन-परिवर्तन हममें परमेश्वर का कार्य है

III. आप प्रभु के लोगों में से नहीं हैं

IV. कलीसिया की "विपरीत साक्षी"

V. मन-परिवर्तन अपने फलों द्वारा प्रमाणित

VI. पुनर्विचार के लिए प्रश्न

# 4

# मन-परिवर्तन की बाइबल-सम्बन्धी व्याख्या

पश्चाताप और विश्वास

बहुत पहले सन् 1878 में, हमारी कलीसिया की प्रथम सभा के समय, हमने एक विश्वास-वचन को अपनाया। यह सन् 1833 के 'न्यू हैम्पशायर कनफ़ैशन ऑफ फ़ेथ' का एक सुदृढ़ किया गया संस्करण था। यह धर्म स्वीकृति बैपटिस्ट विश्वास और उपदेश का आधार बन गई, जिसे सन् 1925 में दक्षिण बैपटिस्ट सम्मेलन द्वारा ग्रहण किया गया और पुनः सन् 1963 के एक संशोधित तथा कमज़ोर बना दिए गए संस्करण के रूप में अपनाया गया। हमारे विश्वास-वचन का अनुच्छेद VIII इस प्रकार कहता है:

> हम विश्वास करते हैं कि पश्चाताप और विश्वास
> पवित्र कर्तव्य हैं, और अपृथक्करणीय
> अनुग्रह भी जो परमेश्वर के नवजीवन प्रदान
> करने वाले आत्मा द्वारा हमारी अंतरात्मा में
> गढ़े गए हैं; जिससे हम अपने दोष, जोखिम,
> निस्सहायपन और मसीह द्वारा उद्धार के मार्ग
> से कायल होते हुए, हम परमेश्वर की ओर
> वास्तविक पश्चाताप, अंगीकार और
> दया की भीख के लिए फिरते हैं;
> और साथ-साथ प्रभु यीशु मसीह को
> अपने नबी, याजक और राजा के
> रूप में सहृदय स्वीकार करते हैं
> और अपने एकमात्र एवं सर्वथा
> पर्याप्त उद्धारकर्त्ता के रूप में उसी
> पर निर्भर करते हैं।

मन-परिवर्तन हममें परमेश्वर का कार्य है

ध्यान दें कि यह कथन हमारे हृदय-परिवर्तन अर्थात् (परमेश्वर की ओर) फिरने के विषय में क्या कहता है। हम इसलिए फिरते हैं क्योंकि हम "अपने पाप, संकट और अपनी लाचारी तथा मसीह द्वारा उद्धार के मार्ग को लेकर उसके प्रति अत्यन्त कायल हैं।" यह मनफिराव जो पश्चाताप और विश्वास से मिलकर बना है, कैसे होता है? यह "नवजीवन प्रदान करने वाले परमेश्वर के आत्मा के द्वारा हमारी अंतरात्मा में गढ़े गए हैं।" इस विचार के समर्थन में पवित्र शास्त्र दो उद्धरण प्रस्तुत

करता हैः प्रेरितों 11:18, "वे यह सुनकर चुप हो गए और परमेश्वर की महिमा करके कहने लगे, 'तब तो परमेश्वर ने गैर-यहूदियों को भी जीवन के लिए मनफिराव का वरदान दिया है' " और इफ़िसियों 2:8, "क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है—और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन् परमेश्वर का दान है।" यदि हमारा मन-परिवर्तन, हममें परमेश्वर द्वारा किये गए कार्य की अपेक्षा हमारे स्वयं के कार्य का परिणाम समझा जाए तो हम इसे ग़लत समझते हैं। मन-परिवर्तन में निश्चित रूप से हमारी क्रिया सम्मिलित है—और उसमें हमारी निष्ठा पूर्ण वचन-बद्धता तथा हमारा सोचा-समझा निर्णय अवश्य होना चाहिए। फिर भी, मन-परिवर्तन (मनफिराव) उससे कहीं अधिक बढ़कर है। पवित्र शास्त्र अपनी शिक्षा में स्पष्ट है कि हम सभी परमेश्वर के पास जाने की यात्रा में सम्मिलित नहीं हैं—कुछ ने मार्ग पा लिया, तो कुछ अभी भी ढूँढ़ रहे हैं। इसके बजाए यह हमें इस प्रकार प्रस्तुत करता है कि हमारे हृदयों को पूर्णतः बदल जाने, मनों को रूपांतरित हो जाने और हमारी आत्माओं को जीवन-संपन्न हो जाने की आवश्यकता है। हम इसमें से कुछ भी नहीं कर सकते। हम एक समर्पण तो कर सकते हैं, परन्तु जरूरी यह है कि हम बचा लिए जाएँ। जिस परिवर्तन की आवश्यकता प्रत्येक मानव को है—चाहे बाहर से हम कैसे भी क्यों न दिखाई दें—वह इतना आमूल है, हमारी जड़ के इतना निकट है, कि केवल परमेश्वर ही इसे कर सकता है। हमारे मन-परिवर्तन के लिए हमें परमेश्वर की आवश्यकता है।

आप प्रभु के लोगों में से नहीं हैं!

मुझे प्रख्यात प्रचारक स्पर्जन के जीवन की वह घटना याद आ रही है कि किस प्रकार जब वह लंदन में कहीं जा रहे थे और तभी एक पियक्कड़ व्यक्ति उनके पास आया, पास ही बत्ती के एक खम्बे पर टेक लगाया और कहा, "हे, श्रीमान् स्पर्जन, मैं आप के द्वारा परिवर्तित लोगों में एक हूँ!" उसके उत्तर में स्पर्जन ने कहा, "तुम मेरे द्वारा परिवर्तित लोगों में से ही हो सकते हो—तुम निश्चित रूप से प्रभु के द्वारा परिवर्तित नहीं किये गए।"

कलीसिया की "विपरीत साक्षी"

मन-परिवर्तन संबंधी बाइबल की शिक्षा को ग़लत ढंग से समझने का जो परिणाम हो सकता है वह यह कि सुसमाचार-संगत कलीसियाएँ ऐसे लोगों से भरी पड़ी हैं जिन्होंने एक समय अपने जीवन में एक वास्तविक समर्पण किया है, परन्तु उन्होंने उस आमूल परिवर्तन का अनुभव स्पष्ट रूप से नहीं किया जिसे बाइबल मनफिराव के रूप प्रस्तुत करती है। दक्षिण बैपटिस्ट कन्वैंशन द्वारा अभी हाल में किये गए एक अध्ययन के अनुसार, मेरे अपने सम्प्रदाय, दक्षिण बैपटिस्ट में तलाक़ की दर वास्तव में अमेरिका के राष्ट्रीय औसत से ऊपर है। मसीह के विख्यात अनुगामियों में इस प्रकार की "विपरीत साक्षी" का कारण कुछ हद तक मनफिराव के विषय में किया गया बाइबल-विरोधी प्रचार है।

मन-परिवर्तन अपने फलों द्वारा प्रमाणित

निश्चित रूप से मन-परिवर्तन के अंतर्गत किसी भावुकता एवं उत्तेजनापूर्ण अनुभव की आवश्यकता नहीं, परन्तु यदि वह बाइबल द्वारा मान्य सच्चा मन-परिवर्तन है तो उसे स्वयं अपने फलों से प्रमाण देना होगा। मन परिवर्तन के संबंध में बाइबल के प्रस्तुतीकरण को समझना स्वस्थ कलीसिया का एक प्रमाण अथवा चिह्न है।

## पुनर्विचार के लिए प्रश्न

1. प्रेरितों 11:18 को पढ़ें। पश्चाताप के मूल आरंभ के विषय में यह परिच्छेद क्या शिक्षा देता है? क्या पश्चाताप आख़िरकार मनुष्य का परमेश्वर की ओर फिरने के एक पक्षीय निर्णय का परिणाम है, अथवा मानव-हृदय पर यह परमेश्वर के नवजीवन प्रदान करने वाले कार्य का परिणाम है?

2. उत्पत्ति 6:5 और रोमियों 8:7 पढ़ें। पाप के अधीन मानव-हृदय की स्थिति का वर्णन करें। परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए मनुष्य की क्षमता अथवा उसकी ओर फिरने के उसके अपने निर्णय का उल्लेख बाइबल किस प्रकार करती है?

3. इफिसियों 2:1-10 पढ़ें। परमेश्वर मन-परिवर्तन के समय हृदयों में एक बड़ा बदलाव उत्पन्न करता है। यह परिच्छेद उस बदलाव को किस प्रकार चित्रित करता है? क्या यह ऐसा कुछ है जो मनुष्य बड़े प्रयास से स्वयं में उत्पन्न कर सका?

4. अभी हाल ही के सर्वेक्षण बतलाते हैं कि आज अमेरिका के सुसमाचारी मसीही कहलाने वालों में विवाह-विच्छेद (तलाक़) की दर राष्ट्रीय औसत से भी ऊपर है। इसका एक कारण क्या हो सकता है? एक व्यक्ति के जीवन में परमेश्वर के आत्मा द्वारा किये जा रहे पुनरुज्जीवन के कार्य के प्रमाण अथवा "फल" के विषय में जो बाइबल सिखाती है वे क्या हैं?

5. पिछली सदियों में, सामान्यतः विश्वासियों को वयस्क (17-20 वर्ष की आयु के) होते ही बपतिस्मा दिया जाता था। इस अंतिम सदी में बपतिस्मा-प्रधान मसीहियों के मध्य इस आयु में बपतिस्मा देने की घटती संख्या का क्या कारण हो सकता है? यह क्यों महत्त्वपूर्ण है?

# 5

# सुसमाचार-प्रचार की बाइबल-सम्बन्धी व्याख्या

I. अवहेलना के परिणाम

II. मन-परिवर्तन की व्याख्या द्वारा सुगठित सुसमाचार-प्रचार

III. सुसमाचार-प्रचार की परिभाषा

IV. मन-परिवर्तन कराना परमेश्वर का कार्य है

V. जब सदस्यता उपस्थिति को पछाड़ देती है

VI. तीन सत्य जिनको व्यक्त करना आवश्यक है

VII. संसाधन

VIII. पुनर्विचार के लिए प्रश्न

# 5

# सुसमाचार-प्रचार की बाइबल-सम्बन्धी व्याख्या

अवहेलना के परिणाम

समीक्षा के रूप में, अब तक हमने एक स्वस्थ कलीसिया के लिए जिन प्रमाणों एवं चिह्नों पर विचार किया है जो उसे अलग करते हैं, वे हैं: व्याख्यात्मक प्रचार, बाइबल-सम्बन्धी धर्म-विज्ञान तथा सुसमाचार एवं मन-परिवर्तन की बाइबल संबंधी व्याख्या। एक तरीका जिसमें हम बता सकते हैं कि ये कितने महत्त्वपूर्ण हैं, वह है कलीसिया के उन परिणामों को ध्यान में रखना जिनके कारण हम उन्हें खो देते हैं। प्रचार बड़ी ही आसानी से वही घिसे-पिटे दोहराए हुए सत्य बन सकते हैं जो पहले से ही लोगों को मालूम हैं। तब मसीहियत और चारों ओर पायी जाने वाली सांसारिक संस्कृति में कोई अंतर नहीं किया जा सकता। सुसमाचार को आत्मिक स्वावलंब से कुछ अधिक करके दोबारा ढाला जा सकता है। मन-परिवर्तन परमेश्वर के कार्य से हटकर मात्र एक मानवीय संकल्प के रूप में विकृत हो सकता है। परन्तु इस प्रकार की सभाएँ—जिसमें उथला प्रचार, सांसारिक सोच और एक आत्म-केन्द्रित सुसमाचार जो शाब्दिक रूप से एक बार किये गए मसीह के अंगीकार (प्रायः रोमियों 10:9 का दुरुपयोग करने) की अपेक्षा कुछ ही अधिक प्रोत्साहन देता है—मसीह में उद्धार के जबरदस्त समाचार की घोषणा नहीं कर सकतीं।

मन-परिवर्तन की व्याख्या द्वारा सुगठित सुसमाचार-प्रचार

कलीसिया के सभी सदस्यों के लिए, परन्तु विशेषकर अगुवों के लिए जिनको शिक्षा देने की सुविधा और ज़िम्मेदारी मिली हुई है, सुसमाचार-प्रचार की बाइबल-सम्बन्धी समझ का होना जरूरी है। उनको यह समझना बड़ा जरूरी है कि किस प्रकार से यदि कोई जन सुसमाचार सुनाता है तो निश्चित रूप से उसका नज़दीकी संबंध इस बात में है कि वह व्यक्ति उस सुसमाचार को कैसे समझाता है। यदि आप का मानस (मन) मानवीय आवश्यकता एवं मन-परिवर्तन को लेकर बाइबल और सुसमाचार के ऊपर निर्मित (विकसित) है, फिर तो सुसमाचार-प्रचार की सही समझ स्वाभाविक रूप से आएगी। हमें अधिक चिंतित, सुसमाचार को जानने और उस को सिखाने के लिए होना चाहिए न कि मात्र लोगों को इसके तरीके और कौशल सिखाने के प्रयास करने के।

सुसमाचार-प्रचार की परिभाषा

बाइबल के अनुसार, सुसमाचार-प्रचार परमेश्वर पर भरोसा रखते हुए कि वह लोगों को परिवर्तित कर दे (प्रेरितों के कार्य 16:14), सेंतमेत में शुभ समाचार को प्रस्तुत करना है। "उद्धार यहोवा ही से आता है" (योना 2:9; तुलना करें यूहन्ना

1:12-13)। किसी भी प्रकार आत्मिक जन्म को जबरन थोपना वैसा ही कारगर होगा जैसा यहेजकेल का सूखी हड्डियों को एक साथ जोड़ने का प्रयास, अथवा नीकुदेमुस का स्वयं को नया जन्म देने का प्रयास। परिणाम वैसा ही होगा।

मन-परिवर्तन कराना परमेश्वर का कार्य है

यदि मन-परिवर्तन को मात्र एक बार की गई प्रतिज्ञा ही समझा जाए, तब तो हमें प्रत्येक जन को उस मोड़ तक ले जाना है जहाँ पर किसी भी प्रकार हम उससे मौखिक अंगीकार तथा समर्पण करवा सकें। बाइबल के अनुसार जहाँ एक ओर हमें चिंता करना, विनती करना और समझाना है, वही हमारा पहला कर्तव्य परमेश्वर से मिले दायित्व के प्रति निष्ठावान रहना है, अर्थात् उसी सुसमाचार को देना जो हमें परमेश्वर ने दिया है। इस प्रकार हमारे सुसमाचार-प्रचार द्वारा परमेश्वर लोगों को मनफिराव का अवसर देगा (यूहन्ना 1:13; प्रेरितों 18:9, 10 देखें)।

यह प्रोत्साहित करने वाली बात है कि किस प्रकार नये मसीही प्रायः स्वभाव से ही अपने उद्धार के दयामय स्वरूप से परिचित जान पड़ते हैं। शायद आप ने पिछले ही कुछ सप्ताहों या महीनों में ऐसी गवाहियाँ सुनी होंगी जो आप को स्मरण दिलाती हैं कि मन-परिवर्तन परमेश्वर का कार्य है। "क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है—और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन् परमेश्वर का दान है—न कि कर्मों के कारण जिससे कि कोई घमण्ड करे" (इफिसियों 2:8-9)।

जब सदस्यता उपस्थिति को पछाड़ देती है

यदि एक कलीसिया की सदस्यता सुस्पष्ट रूप से उसमें लोगों की उपस्थिति से अधिक है, तो यह प्रश्न किया जाना चाहिएः क्या उस कलीसिया को मन-परिवर्तन की बाइबल-सम्बन्धी समझ है? इसके अतिरिक्त, हमें यह प्रश्न भी करना होगा कि यहाँ किस प्रकार का सुसमाचार-प्रचार होता आया है जिसके परिणामस्वरूप लोगों की इतनी बड़ी संख्या कलीसियाई जीवन में निष्क्रिय है, तथापि वह अपनी सदस्यता को सही मानती है और उसे अपने उद्धार का प्रमाण समझती है? क्या कलीसिया ने इस बात पर किसी प्रकार की आपत्ति जताई है, अथवा उसने इस स्थिति पर खामोश रह कर अनदेखी करना ही उचित समझा? बाइबल-संगत कलीसियाई अनुशासन, कलीसिया के सुसमाचार-प्रचार-कार्य का ही भाग है।

तीन सत्य जिनको व्यक्त करना आवश्यक है

मेरे स्वयं के सुसमाचा-प्रचार-कार्य में, मैं लोगों तक निर्णय से संबंधित तीन चीजें पहुँचाना चाहता हूँ जो सुसमाचार के विषय में लेने आवश्यक हैं:

- पहला, निर्णय मूल्यवान होता है (और इसलिए इस पर बड़े ध्यान से विचार किया जाना चाहिए, देखें लूका 9:62);

- दूसरा, निर्णय अत्यावश्यक होता है (और इसलिए इसे अवश्य लिया जाना चाहिए, देखें यूहन्ना 3:18, 36);
- तीसरा, निर्णय लाभदायक होता है (और इसलिए इसे ले लेना चाहिए, देखें यूहन्ना 10:10)।

यही वह सन्तुलन है जिसके लिए हमें अपने परिवार तथा मित्रों के बीच अपने सुसमाचार-प्रचार में प्रयास करना चाहिए। यही वह सन्तुलन है जिसके लिए हमें एक संपूर्ण कलीसिया के रूप में अपने सुसमाचार-प्रचार में प्रयास करना चाहिए।

संसाधन

आज सुसमाचार-प्रचार के संबंध में छपी कुछ बढ़िया सहायता-सामग्री उपलब्ध है। हमारे द्वारा उपयोग की जा रही सुसमाचार तथा सुसमाचारीय तरीकों के मध्य अपनी समझ में निकट का संबंध स्थापित करने के लिए मैं विल मेट्ज़गर की पुस्तक, 'टेल द ट्रुथ' (इण्टर-वर्सिटी प्रेस), तथा आइऐन मरे की 'द इनविटेशन सिस्टम' तथा 'रिवाइवल एण्ड रिवाइवलिज्म' (बैनर ऑफ़ ट्रुथ ट्रस्ट) की संस्तुति (सिफ़ारिश) करता हूँ। एक स्वस्थ कलीसिया का, तब एक और भी चिह्न है—सुसमाचार प्रचार की बाइबल संबंधी समझ और उसका व्यवहार में लाया जाना। एकमात्र सच्ची वृद्धि वह है, जो परमेश्वर की ओर से आती है।

## पुनर्विचार के लिए प्रश्न

1. लेखक ने सुसमाचार-प्रचार की परिभाषा इस प्रकार दी है—"शुभ समाचार को स्वतन्त्रता पूर्वक प्रस्तुत करना और मन-परिवर्तन के लिए परमेश्वर पर विश्वास करना सुसमाचार-प्रचार है।" हमारा सुसमाचार-प्रचार इस मानसिकता से कितना प्रभावित होता है कि "मन-परिवर्तन का कार्य तो परमेश्वर का कार्य है?" हमारे सुसमाचार-प्रचार का क्या होगा, यदि हम अपने आप को यह भरोसा दिला बैठें कि अंत में मनुष्य के लिए यह आवश्यक है कि वह अपने मन-परिवर्तन के लिए स्वयं निर्णय ले?

2. क्या आप की कलीसिया की सदस्यता उसमें पायी जाने वाली लोगों की उपस्थिति से कहीं अधिक है? यदि हाँ, तो आप की समझ से इसके क्या कारण हो सकते हैं? क्या आप की कलीसिया का सुसमाचार-प्रचार, सुसमाचार को एक सन्तुलित एवं स्वस्थ ढंग से प्रस्तुत करना है? सन्तुलन में सुधार लाने के लिए क्या किया जा सकता है?

3. लेखक के यह कहने का क्या आशय है कि मसीह के पीछे चलने का निर्णय लेना "महँगा" है? उसका इससे क्या तात्पर्य है जब वह कहता है कि यह "अत्यावश्यक" है? उसका इससे क्या अर्थ निकलता है जब वह कहता है कि यह "उपयोगी" है? पवित्रशास्त्र के कुछ ऐसे परिच्छेद कौन से हैं जो इन तीन सच्चाइयों को सिखाते हैं?

# 6

# कलीसियाई सदस्यता की बाइबल-संबंधी व्याख्या

I. बाइबल में सदस्यता

II. सदस्यता एक वचनबद्धता है

III. सदस्यता तथा गहरे लगाव के बीच बड़ा रिक्त स्थान

IV. सदस्यता एक दायित्व है

V. सदस्यता उद्धार की सामूहिक साक्षी है

VI. अर्थपूर्ण सदस्यता

VII. पुनर्विचार के लिए प्रश्न

# 6

# कलीसियाई सदस्यता की बाइबल-संबंधी व्याख्या

बाइबल में सदस्यता

एक प्रकार से आज जिसे हम "कलीसिया की सदस्यता" के रूप में जानते हैं वह बाइबल-सम्मत नहीं है। हमारे पास पहली सदी के मसीहियों का कोई लिखित प्रमाण नहीं है जो मानो मध्य यरूशलेम में रह कर मसीहियों की किसी अन्य सभा के बजाय एक सभा-विशेष में संलग्न रहने का निर्णय लेते थे। इससे हम यह कह सकते हैं कि वहाँ लोग कलीसियाएँ ढूँढ़ते नहीं फिरते थे, क्योंकि समुदाय में वहाँ केवल एक ही कलीसिया थी। उस लिहाज से हमें नये नियम में कलीसिया के सदस्यों की किसी भी सूची का कोई ज्ञान नहीं है। परन्तु ऐसे लोगों की सूचियाँ तो हैं जो नये नियम की कलीसिया से जुड़े हुए थे। ये या तो वे विधवाएँ हैं जिनकी देख-भाल कलीसिया करती थी (1 तीमुथियुस 5), या फिर वे नाम जो मेमने की जीवन-पुस्तक में लिखे हुए हैं (फिलिप्पियों 4:3, प्रकाशितवाक्य 21:27)। नये नियम में ऐसे अनेक परिच्छेद हैं जिनमें कलीसियाई सदस्यता व उनकी स्पष्ट सीमाओं का समावेश पाया जाता है। कलीसियाएँ अपने सदस्यों से भलीभाँति परिचित थीं। उदाहरण के लिए, कुरिन्थ की कलीसिया को लिखे गए पौलुस के पत्र यह प्रकट करते हैं कि कुछ व्यक्तियों को कलीसिया से हटाया जाना था (1 कुरिंथियों 5) और कुछ को सम्मिलित किया जाना था (2 कुरिंथयों 2)। इस दूसरे उदाहरण में, पौलुस यहाँ तक बतलाता है कि वे लोग जिन्हें कलीसिया से बहिष्कृत करने का आदेश दिया जा चुका था, अधिसंख्यक थे (2 कुरिंथियों 2:6)। इस शब्द "अधिसंख्यक" का संकेत केवल उन अधिकांश लोगों की ओर हो सकता है जो कलीसिया के सदस्य के रूप में जाने जाते थे।

सदस्यता एक वचनबद्धता है

मसीहियों में कलीसियाई सदस्यता की प्रथा आपस में एक दूसरे को दायित्व और प्रेम में बाँधे रखने के प्रयास के रूप में विकसित हुई है। एक कलीसिया-विशेष के साथ अपने आप को एक करने के द्वारा हम उस स्थानीय कलीसिया के पासबान और सदस्यों के समक्ष अपनी उपस्थिति, भेंट-अर्पण, प्रार्थना एवं सेवा के द्वारा अपनी वचनबद्धता की पुष्टि करते हैं। इन क्षेत्रों में हम अपने प्रति दूसरों की अपेक्षाओं को बढ़ावा देते हैं, और हम यह प्रकट करते हैं कि इस स्थानीय कलीसिया की जिम्मेदारी हम ही हैं। हम कलीसिया के साथ मिलकर कार्य करते हुए कलीसिया को मसीह के प्रति अपने समर्पण का आश्वासन दिलाते हैं तथा उनके समर्पण का आह्वान करते हैं कि शिष्य बनने के हमारे अपने प्रयास में हमें प्रेमपूर्वक प्रोत्साहित करके वे हमारी सेवा करें।

इस अभिप्राय से कलीसियाई सदस्यता एक बाइबल-संगत विचार है। अन्य बातों के साथ, पौलुस ने स्थानीय कलीसिया के लिए देह-संबंधी अलंकारयोजना का उपयोग किया है। यह विचार मसीह के अनुग्रह द्वारा हमें बचाए जाने तथा कलीसियाओं में रखे जाने से आता है कि जैसे हम लोगों की प्रेम से सेवा करते हैं, उसकी भी करें। यह हमारे आपसी दायित्वों से आता है जिसका वर्णन पवित्रशास्त्र के उन परिच्छेदों में किया गया है जहाँ "एक साथ" और "एक दूसरे" शब्दों का प्रयोग किया गया है। ये सभी एक स्वस्थ कलीसिया की वाचा में समाहित हैं (देखें, परिशिष्ट)।

इसमें कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि यदि सुसमाचार-प्रचार, मन-परिवर्तन और सुसमाचार की समझ बाइबल के अनुसार हो, तो कलीसियाई सदस्यता के विषय में हमारी धारणा भी उसी के अनुरूप होगी। तब हम सदस्यता को एक ढीले-संबंध के रूप में कम देखने लगेंगे जो महज कुछ अवसरों पर उपयोगी हो, और नियमित जिम्मेदारी के रूप में अधिक देखना आरंभ कर देंगे कि हम सुसमाचार के अभिप्राय की पूर्ति के लिए एक दूसरे के जीवन में एक हो जाएँ।

सदस्यता तथा गहरे लगाव के बीच बड़ा रिक्त स्थान

कलीसिया की सदस्यता और उसमें सक्रिय रूप से संलग्न लोगों की संख्या के बीच एक बड़े अंतर का पाया जाना कोई बड़ी बात नहीं है। एक कलीसिया की कल्पना कीजिए जिसमें 3000 सदस्य हों और नियमित सभाओं में केवल 600 लोग ही उपस्थित रहते हों। मुझे यह कहते डर लगता है कि आज अनेक सुसमाचारी पासबान इस प्रकार की उपस्थिति से व्यथित होने की अपेक्षा बतलाई गई सदस्यता पर अधिक गर्व करते हैं। दक्षिण बैपटिस्ट-सभा के एक हालिया अध्ययन के अनुसार, यह दक्षिण बैपटिस्ट कलीसियाओं में सामान्य है। एक ठेंठ दक्षिण बैपटिस्ट कलीसिया के 233 सदस्य हैं और रविवार की प्रातःकालीन आराधना में 70 लोग आते हैं। क्या भेंट-अर्पण के विषय में हमारी स्थिति तनिक भी बेहतर है? किन-किन कलीसिया-सभाओं के बजट ऐसे हैं जो—चाहे अलग-अलग बढ़ क्यों न जाते हों—उनके सदस्यों के संयुक्त वार्षिक आय के 10 प्रतिशत की बराबरी कर पाते हैं?

सदस्यता एक दायित्व है

सिवाय इसके जहाँ प्राकृतिक एवं शारीरिक प्रतिबंध उपस्थिति में, अथवा आर्थिक बोझ भेंट-अर्पण में बाधक होते हैं, क्या यह स्थिति इस बात का संकेत नहीं देती कि सदस्यता को अनिवार्य रूप से आवश्यक होना करके प्रस्तुत नहीं किया गया है? फिर भी सदस्यों की इतनी बड़ी संख्या होने का मतलब क्या है? लिखित संख्या उतनी ही सरलता से एक मूर्ति हो सकती हैं जितनी कि खोदकर बनायी गई एक मूर्ति—शायद उससे भी अधिक सरलता से। परन्तु, मैं समझता हूँ, परमेश्वर हमारी संख्याओं को गिनने की अपेक्षा हमारे जीवनों का मूल्यांकन करेगा और हमारे कार्यों

को तौलेगा। यदि कलीसिया एक इमारत है, तो हमें उसकी ईंटें होना है; यदि कलीसिया एक देह है, तो फिर हम उसके अंग हैं; यदि कलीसिया विश्वास का एक घराना है, तो इसका मतलब है कि हम उस घराने के सदस्य हैं। भेड़ें झुण्ड में पाई जाती हैं, और शाखाएँ दाखलता पर। बाइबल के अनुसार यदि कोई मसीही है तो आवश्यक है कि वह किसी कलीसिया का सदस्य हो। एक क्षण के लिए ठोस व्यौरों को एक तरफ कर के—चाहे सदस्यता-सूची 'सफदे कार्ड' पर है अथवा 'कमप्यूटर डिस्क' पर—हमें नियमित रूप से अपने इकट्ठा होने की प्रक्रिया को त्यागना नहीं है (इब्रानियों 10:25)। यह सदस्यता केवल किसी वक्तव्य का लेखा नहीं जो हमने कभी कह दिया हो, और न ही किसी परिचित स्थान के प्रति स्नेह है। इसे एक जीवंत समर्पण होना चाहिए, अन्यथा यह बेकार है—बेकार से भी बदतर—यह ख़तरनाक है।

सदस्यता उद्धार की सामूहिक साक्षी है

असंलग्न सदस्य, वास्तविक सदस्यों और गैर-मसीहियों दोनों ही को कि एक मसीही होने का क्या अर्थ है, भ्रमित करते हैं। जब "सक्रिय" सदस्य "असक्रिय" सदस्यों को कलीसिया के सदस्य बने रहने की अनुमति दे देते हैं, तब "सक्रिय" सदस्य उन "असक्रिय" सदस्यों की कोई सेवा स्वेच्छापूर्वक नहीं करते; क्योंकि सदस्यता एक व्यक्ति के उद्धार के लिए कलीसिया का सामूहिक समर्थन है। पुनः यह बड़ी स्पष्टता से समझा जाना चाहिए: सदस्यता किसी व्यक्तिगत सदस्य के उद्धार के लिए उस कलीसिया की सामूहिक साक्षी होती है। फिर भी एक कलीसिया-सभा ईमानदारी के साथ यह कैसे साक्षी दे सकती है कि अमुक अप्रकट व्यक्ति विश्वासयोग्यता के साथ दौड़, दौड़ रहा है? यदि सदस्यों ने हमारा साथ दिया है और वे किसी अन्य बाइबल-विश्वासी कलीसिया में नहीं गए हैं, तो हम इसका क्या प्रमाण दे सकते हैं कि वे कभी हमारे अंग थे? अनिवार्य रूप से हम यह नहीं जानते कि इस प्रकार के असंलग्न लोग मसीही नहीं हैं; उनके मसीही होने की पुष्टि करना हमारे लिए सरल नहीं होगा। हमें उनको यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि हम जानते हैं कि वे नरक की ओर जा रहे हैं, केवल हम जो उनको नहीं कह सकते वह यह कि "हम जानते हैं कि वे स्वर्ग की ओर जा रहे हैं।"

अर्थपूर्ण सदस्यता

एक कलीसिया के लिए बाइबल-आधारित कलीसियाई सदस्यता के अनुसार उस पर चलने में पूर्णता अथवा आदर्श की आवश्यकता नहीं होती, बल्कि ईमानदारी की आवश्यकता होती है। यह मात्र निर्णयों की नहीं, परन्तु सच्ची शिष्यता की माँग करती है। बाइबल-आधारित कलीसियाई सदस्य का निर्माण केवल व्यक्तिगत अनुभवों के आधार पर नहीं होता, परन्तु परमेश्वर तथा एक दूसरे के साथ वाचा में बँधे लोगों की सामूहिक सहमति के रूप में होता है। व्यक्तिगत रूप से, मेरी आशा यह है कि उसकी सदस्यता की संख्या और अधिक अर्थपूर्ण हो जाए, अर्थात् यह कि वे

जो नाम के सदस्य हैं, वे वास्तव में सदस्य बन जाएँ। अनेक लोगों के लिए इसका अर्थ उनका नाम हमारी सूची से अलग होना था (यद्यपि हमारे हृदयों से नहीं)। अन्य लोगों के लिए, इसका अर्थ हमारी कलीसिया के जीवन के प्रति एक नवीकृत समर्पण था। नये सदस्यों को विश्वास और हमारी कलीसिया के जीवन की शिक्षा दी जा रही है। हमारी कलीसिया के अनेक वर्तमान सदस्यों को उसी प्रकार की शिक्षा तथा प्रोत्साहन की आवश्यकता है। जैसे ही हमने एक स्वस्थ बैपटिस्ट कलीसिया होने की चाह की, जैसा कि हमारा इतिहास रहा था, उपस्थिति में हमारी संख्या एक बार फिर सदस्यों की संख्या से अधिक बढ़ गई। निश्चित रूप से आप की भी अपनी कलीसिया के लिए यही अभिलाषा होनी चाहिए।

सतर्क कलीसियाई सदस्यता के पुनर्स्थापित करने वाले व्यवहार के अनेक लाभ होंगे। इससे गैर-मसीहियों में हमारी साक्षी और स्पष्ट होगी। इससे निर्बल भेड़ों का झुण्ड से भटक जाना कठिन हो जाएगा, यदि वे अभी भी अपने को भेड़ें ही मानती हैं। यह और अधिक परिपक्व मसीही बनने के लिए आवश्यक शिष्यता पर ध्यान केन्द्रित करने और उसे सँवारने में सहायक होगी। यह हमारी कलीसिया के अगुवों को यह समझने में कि वास्तव में वे किसके लिए उत्तरदायी हैं, साधन प्रदान करेगी। इन सभी बातों के द्वारा परमेश्वर की महिमा होगी।

प्रार्थना करें कि कलीसियाई सदस्यता आज की अपेक्षा कुछ अधिक अर्थपूर्ण हो सके, ताकि जिन चीजों के लिए हम उत्तरदायी हैं उन्हें बेहतर ढंग से समझ सकें, और हम उनके लिए प्रार्थना कर सकें तथा उन्हें प्रोत्साहन और चुनौती दे सकें। हमें अपनी कलीसियाओं में लोगों को भावुक कारणों के आधार पर सदस्यता बनाए रखने की अनुमति नहीं देनी चाहिए। यदि बाइबल के आधार पर देखा जाए तो ऐसी सदस्यता कोई भी सदस्यता नहीं है। अपनी कलीसिया की वाचा में हम यह प्रतिज्ञा करते हैं कि, "जब हम इस स्थान से कहीं और जाएँगे, तो यथाशीघ्र किसी दूसरी कलीसिया से जुड़ जाएँगे जहाँ हम इस वाचा की भावना तथा परमेश्वर के वचन के सिद्धान्तों को कार्यान्वित कर सकें।" यह समर्पण, विशेष रूप से इस क्षणिक युग में, स्वस्थ शिष्यता का एक भाग है।

कलीसियाई सदस्यता का अर्थ, व्यावहारिक रूप से मसीह की देह में एक होना है। तात्पर्य यह कि जब हम अपने स्वर्गीय वतन की ओर रुख़ करते हैं तो यह हमारे लिए हमें इस संसार में यात्री और परदेशी की तरह एक साथ भ्रमण करने के समान है। निःसन्देह, एक स्वस्थ कलीसिया का अन्य चिह्न (प्रमाण), कलीसियाई-सदस्यता की बाइबल-संबंधी समझ (व्याख्या) है।

## पुनर्विचार के लिए प्रश्न

1. क्या बाइबल स्थानीय कलीसिया की सदस्यता-सूची का सुस्पष्ट उल्लेख करती है? वह कहाँ अन्तर्निहित है? (पढ़ें 1 कुरिंथियों 12:14-26)। मसीही होने के नाते एक दूसरे के प्रति अपने कर्त्तव्य को मसीह की देह के रूप में पूरा करने में कलीसिया की सदस्यता किस प्रकार हमारी सहायता कर सकती है?

2. लेखक ने लिखा है कि हमें सदस्यता को एक "ढीले संबंध के रूप में कम देखने की आवश्यकता है जो महज कुछ अवसरों पर उपयोगी हो, और नियमित जिम्मेदारी के रूप में अधिक देखने की आवश्यकता है कि हम सुसमाचार के अभिप्राय की पूर्ति के लिए एक दूसरे के जीवन में एक हो जाएँ।" इस कथन के प्रकाश में आप के अधिकांश सदस्य अपनी सदस्यता को किस प्रकार देखते हैं? एक कलीसिया के सदस्य का क्या उत्तरदायित्व होता है? सुसमाचार-कार्य में उन उत्तरदायित्वों की पूर्ति किस प्रकार सहयोग प्रदान करती है?

3. लेखक का यह विश्वास है कि "कलीसियाई सदस्यता मसीह के लिए जीवंत समर्पण का प्रतिबिंब होना चाहिए अन्यथा यह बेकार और ख़तरनाक भी है," यह सत्य क्यों हो सकता है? मसीह तथा उसकी कलीसिया के लिए एक जीवंत समर्पण का क्या अर्थ है?

4. लेखक लिखता है कि कलीसिया की सदस्यता एक व्यक्तिगत सदस्य के उद्धार के लिए कलीसिया की सामूहिक साक्षी है। इब्रानियों 13:17 पढ़ें। बाइबल सिखाती है कि कलीसिया के अगुवों को उन लोगों के प्रति जो उनकी देख-रेख में हैं "लेखा देना" होगा। क्या आप सोचते हैं कि यह "लेखा" मात्र एक व्यक्ति का कथन होगा कि एक व्यक्ति ने एक बार मसीह के लिए निर्णय लिया, अथवा यह ज्ञान से पूर्ण गवाही है कि एक व्यक्ति बड़ी विश्वासयोग्यता के साथ सुसमाचार द्वारा फल ला रहा है? यह हमारी इस व्याख्या पर कि किसे कलीसिया की सदस्यता-सूची में होना है, किस प्रकार प्रभाव डालता है?

5. लेखक हमारी कलीसियाई-सदस्यता की सूची बनाने में चौकसी बरतने के कई लाभ बताता है। कलीसियाई सदस्यता की हमारी बाइबल-सम्बन्धी समझ किस प्रकार गैर-मसीहियों में हमारी गवाही को स्पष्ट करेगी? यह निर्बल मसीहियों को जो अभी भी अपने को मसीही समझते हैं, किस प्रकार भटकने से रोकेगी? परिपक्व मसीहियों के लिए आवश्यक शिष्यता पर यह किस प्रकार ध्यान केंद्रित करने तथा उसे सँवारने में सहायक होगी?

# 7

# बाइबल-सम्बन्धी कलीसियाई अनुशासन

I. परमेश्वर द्वारा पवित्रता की माँग

II. न्याय करना

III. परमेश्वर कलीसिया से न्याय करने की आशा करता है

IV. सामने का द्वार बंद करो, पीछे का द्वार खोल दो

V. नये सदस्यों को लाना

VI. उत्तरदायित्व के साथ अनुशासन रखना

VII. दोष-निवारक अनुशासन के पाँच कारण

VIII. पुनर्विचार के लिए प्रश्न

# 7

# बाइबल-सम्बन्धी कलीसियाई अनुशासन

एक स्वस्थ कलीसिया का सातवाँ चिह्न व प्रमाण कलीसियाई अनुशासन का नियमित आचरण है। कलीसियाई अनुशासन का बाइबल-सम्बन्धी आचरण कलीसिया के सदस्य होने का एक अर्थ प्रदान करता है। यद्यपि यह मसीह के समकालीन कलीसियाओं द्वारा सामान्य रूप से व्यवहार में लाया जाता रहा है, परन्तु पिछली कुछ पीढ़ियों से इसका नियमित एवं सुसमाचारी-कलीसियाई जीवन-स्वरूप विलुप्त हो गया है।

परमेश्वर द्वारा पवित्रता की माँग

मूलतः हम मानव इसलिए बनाए गए थे कि हम परमेश्वर का स्वरूप धारण करके उसकी सृष्टि के लिए उसके स्वभाव के गवाह हो सकें (उत्पत्ति 1:27)। अतः यह आश्चर्य की बात नहीं है कि बाइबल के समूचे पुराने नियम में, जैसा कि परमेश्वर ने अपने लिए एक प्रजा तैयार करके, उसने उन्हें पवित्रता के विषय में निर्देश दिए कि उनका स्वभाव अधिकाधिक उसके निकट दिखाई दे (लैव्यव्यवस्था 19:2; नीतिवचन 24:1; 25)। यही पुराने नियम में सुधारने और यहाँ तक कि कुछ को समाज से बहिष्कृत करने का आधार भी था (जैसे, गिनती 15:30-31), और यही नये नियम की कलीसिया को आकार देने का भी आधार है (देखें 2 कुरिंथियों 6:14-7:1; 13:2; 1 तीमुथियुस 6:3-5; 2 तीमुथियुस 3:1-5)।

न्याय करना

फिर भी यह संपूर्ण विचार आज लोगों को बहुत ही नकारात्मक लगता है। अन्ततः, क्या हमारे प्रभु यीशु ने मत्ती 7:1 में किसी के न्याय करने की मनाही नहीं की? निश्चित रूप से यीशु ने एक प्रकार से मत्ती 7:1 में किसी का न्याय करने के लिए मना किया था, परन्तु उसी सुसमाचार में, यीशु ने बड़े स्पष्ट रूप से पाप के प्रति दूसरों की भर्त्सना करने का आह्वान भी किया, यहाँ तक कि सार्वजनिक रूप से भी (मत्ती 18:15-17; तुलना करें लूका 17:3)। अतः यीशु का मत्ती 7:1 में लोगों को जाँचने की मनाही का जो भी तात्पर्य रहा हो, उसका यह मतलब कतई नहीं था कि अँग्रेज़ी शब्द "Judging" (दोष लगाने) के सभी अर्थों को निकाल दिया जाए।

परमेश्वर स्वयं एक न्यायाधीश हैं। वह अदन के बाग़ में था, और हम उसके सत्यनिष्ठ न्याय के अधीन तब तक रहेंगे जब तक कि हम अपने पापों में बने रहेंगे। पुराने नियम में परमेश्वर, राष्ट्रों और व्यक्तिगत दोनों का न्याय करता था, और नये नियम में हम मसीहियों को चेतावनी दी गई है कि हमारे कार्यों की जाँच होगी

(1 कुरिंथियों 3)। प्रेम में परमेश्वर अपनी संतान को अनुशासित करता है, और वह क्रोध में दुष्टों को दण्ड देगा (देखें, इब्रानियों 12)। निःसन्देह, अंतिम दिन, परमेश्वर स्वयं को परम न्यायाधीश के रूप में प्रकट करेगा (देखें, प्रकाशितवाक्य 20)। इन सभी न्याय-प्रक्रियाओं में, परमेश्वर कभी भी ग़लत नहीं होगा। वह सदैव न्यायसंगत है (देखें यहोशू 7; मत्ती 23; लूका 2; प्रेरितों के कार्य 5; रोमियो 9)।

परमेश्वर कलीसिया से न्याय करने की आशा करता है

आज इस बात का बोध होना बहुतों के लिए एक आश्चर्यजनक बात है कि परमेश्वर दूसरों से भी न्याय करने की अपेक्षा करता है। शासन को न्याय करने का दायित्व सौंपा गया है (देखें रोमियों 13)। हमें स्वयं को जाँचने के लिए कहा गया है (देखें 1 कुरिंथियों 11:28; इब्रानियों 4; 2 पतरस 1:5)। हमें यह भी कहा गया है कि हम कलीसिया में एक दूसरे को जाँचें (यद्यपि निर्णायक रूप में उस प्रकार नहीं जैसे परमेश्वर जाँचता है)। यीशु के वचन मत्ती 18 में, पौलुस के 1 कुरिंथियों 5-6 में, और अन्य कई परिच्छेद यह बड़ी स्पष्टता से दिखाते हैं कि कलीसिया को अपने भीतर न्याय के कार्य को बनाए रखना है, और कि यह न्याय मुक्ति प्रदान कराने वाला हो, न कि बदला लेने वाला (रोमियों 12:19)। कुरिंथ नगर में व्यभिचारी व्यक्ति, तथा इफ़िसुस में झूठे शिक्षकों के संबंध में पौलुस ने कहा कि उन्हें कलीसिया से बहिष्कृत किया जाय और शैतान के हाथों में सौंप दिया जाए जिससे कि उन्हें सही सीख मिल सके और उनकी आत्माएँ बचाई जा सकें (देखें 1 कुरिंथियों 5; 1 तीमुथियुस 1)।

इसमें कोई आश्चर्य करने की बात नहीं कि हमें न्याय करने का निर्देश दिया जाए। आख़िर, यदि हम यह नहीं कह सकते कि एक मसीही किस प्रकार अमुक जीवन नहीं जीता, तो फिर हम यह कैसे कह सकते हैं कि किस प्रकार का जीवन वह व्यतीत करता या करती है? अनेक कलीसियाओं में शिष्यता के कार्यक्रम को लेकर मेरी चिंता यह है कि उनके कार्यक्रम मानो रिसती बाल्टियों में पानी उण्डेलने के समान है—उनका सारा ध्यान इस बात पर होता है कि उसमें क्या उण्डेला जाता है, बिना विचार किये कि उसे किस प्रकार ग्रहण किया जता और रखा जाता है।

सामने का द्वार बन्द करो, पीछे का द्वार खोल दो

एक कलीसियाई वृद्धि-विशेषज्ञ ने हाल ही में "एक कलीसिया की वृद्धि में सहायता" को लेकर अपनी परामर्श का सारांश कुछ इस प्रकार दिया है: "सामने का द्वार खोलो और पीछे का द्वार बन्द कर दो।" इससे उसका अभिप्राय यह है कि हमें ऐसी कलीसिया बनाने का यत्न करना चाहिए जो लोगों के लिए अधिक सुलभ हो और अनुवर्तन-कार्य (फॉलो-अप) बेहतर हो। ये दोनों ही लक्ष्य अच्छे हैं। फिर भी

अधिकांश पासवान आज पहले से ही ऐसी कलीसियाओं के उच्चाकांक्षी होते हैं जिनके सामने के द्वार खुले और पीछे के द्वार बन्द हों। परन्तु इसके बदले, यदि हम एक बाइबल-सम्बन्धी नमूने का अनुसरण करने का प्रयास करें तो यह हमें इस नीति को अपनाने की प्रेरणा देगाः "सामने का द्वार बन्द करो और पीछे का द्वार खोल दो।" दूसरे शब्दों में, एक ओर कलीसिया में जुड़ने को अधिक कठिन बना दो, और दूसरी ओर उससे अलग करने की प्रक्रिया को सरल कर दो। ऐसे कार्य कलीसिया को उसके दिव्य-स्वरूप को पुनः प्राप्त करने—संसार से उसकी भिन्नता को समझने—में सहायक होंगे।

नये सदस्यों को लाना

यह अनुशासन सर्वप्रथम कलीसिया में नये सदस्य लेते समय दिखाई देना चाहिए। क्या हम नई सदस्यता लेने वाले उन लोगों से पूछते हैं कि क्या वे (नये सदस्य) ऐसा जीवन जीएँगे जिससे मसीह को सम्मान मिलेगा? क्या हम उस प्रतिज्ञा की गंभीरता को समझते हैं जो हम नये सदस्यों से, और वे हमसे कर रहे हैं? यदि हम नये सदस्यों को पहचानने और उन्हें स्वीकार करने में अधिक सावधान रहें, तो आगे चलकर हमारे लिए कलीसियाई अनुशासनात्मक कार्रवाई करने के अवसर कम ही होंगे।

उत्तरदायित्व के साथ अनुशासन रखना

बेशक, किसी भी प्रकार का कलीसियाई अनुशासन बड़े ख़राब ढंग से किया जा सकता है। नये नियम में हमें यह सिखाया गया है कि दूसरों पर दोष हम उन उद्देश्यों से न लगाएँ जिनका हम उन पर लांछन लगाते हैं (मत्ती 7:1), अथवा अनावश्यक बातों को लेकर हम एक दूसरे पर दोष न लगाएँ (रोमियों 14-15)। पासवानों की कार्य-विधि में यह मुद्दा एक समस्या बना हुआ है, परन्तु हमें यह याद रखना है कि सम्पूर्ण मसीही जीवन कठिन, और अपमान के लिए खुला है। हमारी कठिनाइयाँ इसे त्याग देने का बहाना नहीं बननी चाहिए चाहे भले ही वे अप्रायोगिक (अव्यवहृत) हों। प्रत्येक स्थानीय कलीसिया का यह दायित्व है कि वह अपने अगुवों के जीवन व शिक्षा को परखे, साथ ही कलीसिया के सदस्यों को भी; क्योंकि दोनों में से कोई भी सुसमाचार के साक्ष्य होने में समझौता कर सकता है (देखें प्रेरितों 17; 1 कुरिंथियों 5; 1 तीमुथियुस 3; याकूब 3:1; 2 पतरस 3; 2 यूहन्ना)।

दोष-निवारक अनुशासन के पाँच कारण

बाइबल के अनुसार कलीसियाई अनुशासन केवल परमेश्वर की आज्ञाकारिता और एक सामान्य स्वीकृति है कि हमें सहायता की आवश्यकता है। यहाँ दोष-निवारक कलीसियाई अनुशासन के पाँच सकारात्मक कारण दिए गए हैं: (1) अनुशासित व्यक्ति के लिए (2) अन्य मसीहियों के लिए जैसा कि वे पाप के जोखिम को देखते हैं (3) संपूर्ण कलीसिया के स्वास्थ्य के लिए (4) कलीसिया की

सामूहिक साक्षी के लिए; और इनमें से सर्वाधिक यह कि (5) हमारी पवित्रता परमेश्वर की पवित्रता को प्रतिबिंबित करने के लिए है। कलीसिया के सदस्य होने का कुछ अर्थ होना चाहिए, हमारे गर्व के लिए नहीं, परन्तु परमेश्वर के नाम के निमित्त। बाइबल-सम्बन्धी कलीसियाई अनुशासन एक स्वस्थ कलीसिया का एक अन्य चिह्न है।

## पुनर्विचार के लिए प्रश्न

1. यूहन्ना 5:27-30 पढ़ें। पिता ने न्याय करने का अधिकार किसे सौंपा है? अब मत्ती 18:15-17 पढ़ें। यीशु ने इस संसार में न्याय करने का अधिकार किसे दिया है? क्या कलीसिया ने परमेश्वर द्वारा हमें दिए गए कार्य-भार का निष्ठापूर्वक संचालन किया है?

2. 1 कुरिंथियों 5:1-2 पढ़ें। पौलुस के अनुसार कुरिंथ नगर की कलीसिया को इस पापी सदस्य के साथ क्या व्यवहार करना चाहिए? अब पद 3-5 पढ़ें। कलीसिया को किसके अधिकार से (किसके नाम में) निर्णय लेना है? इस प्रकार के निर्णय की परम आशा क्या है? क्या आप सोचते हैं कि पौलुस प्रेरित कलीसियाई अनुशासन को एक हृदय-विहीन एवं क्रूर कार्य समझता था, अथवा एक स्नेहपूर्ण कार्य जिससे किसी व्यक्ति की आत्मा को लाभ पहुँचेगा?

3. एक लेखक ने कहा है कि मसीहियों को "कलीसिया के सामने का द्वार खुला और पीछे का द्वार बंद रखना चाहिए।" इस कथन का क्या अर्थ है? लेखक आगे कहता है कि इसके बदले हम "सामने का द्वार बंद, और पीछे का द्वार खुला रखें।" आप के अनुसार इनमें से कौन-सा विचार स्वस्थ कलीसियाई सदस्यता की भली-भाँति देखभाल करेगा?

4. रोमियों 14:1-4 पढ़ें। कौन-से वे कुछ तरीके हैं जिनसे कलीसियाई अनुशासन दुर्व्यवहार के लिए खुला हो सकता है? आप कुछ समय यह सोचने में बिताएँ कि आप की कलीसिया मत्ती 18:15-17 में व्यक्त हमारे प्रभु के आदेश को निष्ठा एवं सावधानीपूर्वक, दुर्व्यवहार से रक्षा करती हुई, किस प्रकार पूरा कर सकती है?

# 8

# मसीही शिष्यता और विकास की प्रोन्नति के प्रति चिंता

I. मसीही विकास

II. पवित्रता विकास का प्रमाण है

III. अनुशासन की अनदेखी विकास में बाधक है

IV. समुदाय का एक साथ विकास

V. विकास का प्रकटन

VI. विकास से परमेश्वर महिमान्वित होता है

VII. पुनर्विचार के लिए प्रश्न

# 8

# मसीही शिष्यता और विकास की प्रोन्नति के प्रति चिंता

मसीही विकास

कलीसिया की वृद्धि को लेकर एक स्वस्थ कलीसिया की अलग पहचान कराने वाला एक अन्य चिह्न इसकी प्रोन्नति के प्रति व्यापक चिंता है—केवल बढ़ती संख्या को लेकर नहीं, बल्कि विकसित हो रहे सदस्यों को लेकर। कुछ लोगों का आज यह मानना है कि कोई भी व्यक्ति आजीवन एक "दूध पीता मसीही" बना रह सकता है। विकास को एक अतिरिक्त-वैकल्पित रूप में देखा जाता है, विशेष रूप से उत्साही शिष्यों के लिए। परन्तु वृद्धि जीवन का एक लक्षण है। बढ़ते हुए पेड़ ही जीवित पेड़, और बढ़ते हुए जन्तु, जीवित जन्तु होते हैं। वृद्धि (विकास) में बढ़ोत्तरी और प्रगति दोनों सम्मिलित हैं। हमारे अनुभव के अनेक क्षेत्रों में, जब कोई चीज़ बढ़ना बन्द कर देती है तो वह मर जाती है।

पौलुस को आशा थी कि कुरिन्थ की कलीसिया के लोग अपने मसीही विश्वास में आगे बढ़ेंगे (2 कुरिंथियों 10:15)। इफिसियों के लिए उसकी आशा थी कि वे "सब बातों में उसमें जो सिर है, अर्थात् मसीह में बढ़ते जाएँ" (इफ़िसियों 4:15; तुलना करें कुलुस्सियों 1:10; 2 थिस्सलुनीकियों 1:3)। पतरस ने कुछ आरंभिक मसीहियों को प्रोत्साहित करते हुए लिखा कि "नवजात शिशुओं के समान शुद्ध आत्मिक दूध के लिए लालायित रहो, जिससे कि तुम उद्धार में बढ़ते जाओ (1 पतरस 2:2)। पासबानों के लिए यह बड़ा लुभाने वाला है कि जहाँ विकास सुनिश्चित है वे अपनी कलीसिया के सदस्यों की संख्या का आँकड़ा कम कर के सँभाले जाने भर बपतिस्मों, भेंट-अर्पण और सदस्यता तक ही सीमित रखें; फिर भी, ऐसे आँकड़े उस वास्तविक वृद्धि से कहीं पीछे हैं जिसका वर्णन पौलुस करता है, और जिसकी आकांक्षा परमेश्वर रखता है।

पवित्रता विकास का प्रमाण है

अपने शोध-प्रबन्ध (ट्रीटाइज़) "कन्सर्निंग रिलिजस अफैक्शन्स" में जोनथन एडवर्ड ने सुझाया कि मसीही शिष्यता में वास्तविक वृद्धि अन्ततः मात्र उत्तेजना, धार्मिक भाषाओं के बढ़ते प्रयोग अथवा पवित्रशास्त्र के बढ़ते ज्ञान में नहीं है। यह कलीसिया के प्रति व्यक्त बढ़ते आनन्द अथवा प्रेम अथवा लगाव में भी दिखाई नहीं देती। यहाँ तक कि परमेश्वर के प्रति उत्साह में बढ़ोत्तरी और उसकी स्तुति और अपने विश्वास पर भरोसा रखना भी वास्तविक मसीही विकास के अचूक प्रमाण नहीं

हैं। तो फिर क्या है? एडवर्ड्स के अनुसार, जब कि ये सब वास्तविक मसीही विकास के प्रमाण हो सकते हैं, परन्तु जो एकमात्र निश्चित दिखाई देने वाला चिह्न है, वह है पवित्रता में बढ़ते रहने वाला एक ऐसा जीवन जो मसीही स्वार्थ-त्याग में जड़ पकड़े हुए हो। ऐसी कलीसिया जिसके सदस्यों के जीवनों में बढ़ती इस प्रकार की परमेश्वर-परायणता दिखाई देती हो, बड़े ध्यान से चिन्हित की जानी चाहिए।

अनुशासन की अनदेखी विकास में बाधक है

जैसा हमने सातवें चिह्न में देखा कि कलीसिया के उचित अनुशासन की उपेक्षा का एक अनचाहा परिणाम, विकसित हो रहे शिष्यों में बढ़ती कठिनाई है। एक अनुशासनहीन कलीसिया में, उदाहरण अस्पष्ट और आदर्श चकराए हुए होते हैं। कोई भी माली खर-पतवार नहीं लगाता है। खर-पतवार तो अवांछनीय होते ही हैं, वे अपने आस-पास के पौधों पर बुरा असर भी छोड़ सकते हैं। स्थानीय कलीसिया के लिए परमेश्वर की योजना हमें यह अनुमति नहीं देती कि हम कलीसियाई खर-पतवारों को यों ही छोड़ दें।

समुदाय का एक साथ विकास

एक वाचा से बँधे विश्वासियों के समुदाय में पाये जाने वाले अच्छे प्रभाव परमेश्वर के हाथों में उसके लोगों के विकास के साधन बन सकते हैं। जैसे-जैसे परमेश्वर के लोग निर्मित होते तथा पवित्रता और स्वेच्छा से अर्पित करने वाले प्रेम में एक साथ विकसित होते जाते हैं, उन्हें अनुशासन लागू करने और शिष्यता को प्रोत्साहित करने की अपनी योग्यता में सुधार लाना चाहिए। कलीसिया का यह दायित्व है कि अनुग्रह में बढ़ते हुए परमेश्वर के लोगों के लिए वह एक साधन बने। यदि इसके बदले में वे वह स्थान बन कर रह जाएँ जहाँ केवल पासबान (पास्टर) के विचार सिखाए जाते हों, जहाँ परमेश्वर की उपासना से अधिक उस पर प्रश्न उठाए जाते हों, जहाँ सुसमाचार को हल्का किया जाता तथा सुसमाचार-प्रचार को बिगाड़ा जाता हो, जहाँ कलीसियाई-सदस्यता को अर्थहीन बना दिया जाता हो, और पासबान के इर्द-गिर्द एक सांसारिक व्यक्ति-पूजा को विकसित करने की इजाज़त दी जाती हो, तब तो किसी के लिए ऐसे समुदाय को पाने की आशा करना बड़ा कठिन हो जाएगा जो या तो संसक्तिशील हो अथवा शिक्षाप्रद हो। ऐसी कलीसिया निश्चित रूप से परमेश्वर की महिमा नहीं करेगी।

विकास का प्रकटन

परमेश्वर को उन कलीसियाओं द्वारा महिमा मिलती है जो विकासशील होती हैं। वह विकास अनेक बहुत से रूपों में दिखाई दे सकता है: जैसे, मिशन-कार्यों के लिए दिए गए आह्वान के प्रति बढ़ती संख्या के रूप में; सुसमाचार-प्रचार में पुराने सदस्यों द्वारा अपनी जिम्मेदारी को लेकर नयी चेतना प्राप्त करने के रूप में; अंत्येष्टि के समय वृद्ध सदस्यों के प्रति मात्र स्नेहवश युवा-सदस्यों की उपस्थिति के रूप में;

अधिकाधिक प्रार्थना के रूप में; प्रचार के प्रति बढ़ती इच्छा के रूप में; कलीसियाई सभाओं—विशेषकर उनमें निष्कपट आत्मिक वार्तालाप—के रूप में; भेंट-अर्पण में बढ़ोत्तरी के रूप में तथा दाताओं द्वारा त्याग-भावना से देने के रूप में; आधिकाधिक सदस्यों द्वारा दूसरों में सुसमाचार बाँटने के रूप में; माता-पिता द्वारा अपने बच्चों को विश्वास में शिक्षित करने के अपने दायित्व की पुनर्प्राप्ति के रूप में। ये तो वांछित कलीसियाई-वृद्धि के कुछ ही उदाहरण हैं जिसके लिए मसीही लोग प्रार्थना करते और कार्यरत रहते हैं।

विकास से परमेश्वर महिमान्वित होता है

जब हम एक ऐसी कलीसिया को देखते हैं जो मसीह की समरूपता में बढ़ने वाले सदस्यों से मिलकर बनी हो, तो इसका श्रेय किस को जाता है, अथवा इसकी महिमा किसको मिलती है? "परमेश्वर ने इसे बढ़ाया। अतः न तो बोने वाला कुछ है, और न ही सींचने वाला; परन्तु बढ़ाने वाला परमेश्वर ही सब कुछ है।" (1कुरिंथियों 3:6 ब,7; तुलना करें कुलुस्सियों 2:19)। अतः पतरस अपना अंतिम आशीष-वचन जो उसने अपने समकालीन आरंभिक मसीहियों को लिखा वह आदेश सूचक शब्दों में व्यक्त किया गया एक निवेदन था: "परन्तु हमारे उद्धारकर्ता प्रभु यीशु मसीह के अनुग्रह और ज्ञान में बढ़ते जाओ। उसकी महिमा अब भी हो और युगानुयुग होती रहे! आमीन" (2 पतरस 3:18)। हम यह सोच सकते हैं कि हमारी वृद्धि हमारी अपनी महिमा का कारण ठहरेगी। परन्तु पतरस इसे अच्छी तरह जानता था। "अन्यजातियों के मध्य अपना चाल-चलन उत्तम बनाए रखो, जिससे वे जिन बातों में कुकर्मी कहकर तुम्हारी निंदा करते हैं, उन्हीं बातों में तुम्हारे भले कामों को देख कर न्याय के दिन परमेश्वर की महिमा करें" (1 पतरस 2:12)। उसे स्पष्टरूप से यीशु के वचन स्मरण थे, "तुम्हारा प्रकाश मनुष्यों के सम्मुख इस प्रकार चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देख कर" और निश्चित रूप से हम यहाँ पर यह सोचने लग जाते हैं कि आत्म-प्रशंसा के जाल में फँस जाना तो स्वाभाविक ही है, परन्तु यीशु ने आगे कहा—"तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में है, महिमा करें" (मत्ती 5:16)। मसीही शिष्यता एवं विकास के प्रोत्साहन के लिए कार्य करते रहना एक स्वस्थ कलीसिया का एक अन्य प्रमाण (चिह्न) है।

## पुनर्विचार के लिए प्रश्न

1. पढ़ें (1 पतरस 2:1-3)। इन मसीहियों के लिए पतरस की क्या आशा है? उद्धार में "बढ़ते जाओ" से उसका क्या तात्पर्य है?

2. कुछ लोगों का यह मानना है कि "कलीसियाई विकास" का अर्थ मात्र

संख्या में बढ़ना है। प्रेरितों के कार्य 2:41 पढ़ें। आप क्या सोचते हैं कि यहाँ उन विश्वास लाए हुए लोगों की संख्या क्यों दी गई है? अब शेष रहे 2 अध्याय को पढ़ें। क्या उन मन-फिराए लोगों की वह बड़ी संख्या परमेश्वर को महिमा दे पाती यदि वे पवित्रता में भी न बढ़े होते? क्यों अथवा क्यों नहीं?

3. लेखक लिखता है कि खर-पतवार अपने आस-पास के पौधों पर बुरा असर डाल सकते हैं। कलीसिया के अनुशासनहीन तथा बुरे सदस्य अपने आस-पास के मसीहियों के विकास को किस प्रकार नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकते हैं? कलीसिया में पाये जाने वाले अच्छे प्रभाव किस प्रकार परमेश्वर के हाथ में उसके अपने लोगों को बढ़ाने के लिए उपकरण बन सकते हैं? क्या आप अपनी कलीसिया में ऐसे कुछ उदाहरण सोच सकते हैं?

4. वे कौन से कुछ तरीके हैं जिनमें आत्मिक रूप से परिपक्व होती कलीसिया के द्वारा परमेश्वर को महिमा मिलती है? आप को इनमें से कितनी चीज़े आप की कलीसिया के अपने जीवन में संगतरूप से दिखाई देती हैं?

# 9

# बाइबल-सम्बन्धी कलीसियाई नेतृत्व

I. बाइबल-सम्बन्धी प्राचीन का पद

II. प्रचीनों का संक्षिप्त इतिहास

III. कलीसिया-सभा—अंतिम कसौटी

IV. समस्त प्राचीन—"अध्यापन-प्राचीन"

V. प्राचीनों की बहुसंख्या

VI. पासबान (पास्टर) की भिन्न भूमिका

VII. प्राचीनों की बहुसंख्या के लाभ

VIII. प्राचीनों और डीकनों में भ्रम

IX. पुनर्चिचार के लिए प्रश्न

# 9

# बाइबल-सम्बन्धी कलीसियाई नेतृत्व

बाइबल-सम्बन्धी प्राचीन का पद

एक स्वस्थ कलीसिया में किस प्रकार का नेतृत्व पाया जाना चाहिए? क्या एक ऐसी कलीसिया-सभा, जो मसीह को समर्पित हो और उसे सेवा करने का वरदान प्राप्त हो? हाँ। डीकन, जो कलीसिया के मामलों में सेवा के आदर्श (नमूने) होते हैं? हाँ। एक पास्टर (पासबान) जो परमेश्वर के वचन का प्रचार करने में विश्वासयोग्य है? हाँ। परन्तु बाइबल के अनुसार, कुछ और भी है जो कि एक स्वस्थ कलीसिया के नेतृत्व का एक भाग है: प्राचीन (एल्डर्स)।

एक पासबान (पास्टर) की हैसियत से, मैं प्रार्थना करता हूँ कि मसीह हमारी मण्डली में ऐसे लोग रखे जिनके आत्मिक वरदान और चरवाही करने की उनकी चिंता यह दर्शाएँ कि परमेश्वर ने उन्हें प्राचीन अथवा सर्वेक्षक (बाइबल में इन शब्दों का प्रयोग आपस में अदल-बदल कर किया गया है; उदा. प्रेरितों 20) होने के लिए बुलाया है। मैं प्रार्थना करता हूँ कि परमेश्वर हमारी कलीसिया के चरवाही करने वाले सर्वेक्षकों और शिक्षा के लिए ऐसे शिष्यों को बढ़ाए और आगे लाए। यदि यह स्पष्ट हो जाए कि परमेश्वर ने कलीसिया में एक व्यक्ति-विशेष को ऐसा ही दान दिया है, और यदि प्रार्थना के बाद कलीसिया उसके दानों को स्वीकार कर लेती है, तब उस व्यक्ति को एक प्राचीन के रूप में पृथक कर लिया जाना चाहिए।

प्राचीनों का संक्षिप्त इतिहास

सभी कलीसियाओं में ऐसे लोग रहे हैं जिन्होंने प्राचीनों के कार्यों का निर्वाह किया, भले ही उन्होंने उन्हें अन्य दूसरे नामों से बुलाया। नये नियम में इस पद के लिए जो दो यूनानी नाम प्रयुक्त हुए, वे हैं *एपिसकोपॉस* (सर्वेक्षक) और *प्रेसबुतरॉस* (प्राचीन)। जब सुसमाचारी-मसीही (इवैंजैलिकल्स) "प्राचीन" शब्द को सुनते हैं तो तुरन्त बहुत से लोग "प्रेसबिटीरियन" समझ बैठते हैं, फिर भी पिछली सोलहवीं सदी में प्रथम धर्म-संघवादियों (फर्स्ट कौंग्रिगेश्नलिस्ट्स) में यह शिक्षा थी कि नये नियम की कलीसिया में "प्राचीन" एक पद हुआ करता था। अट्ठारहवीं सदी से लेकर उन्नीसवीं सदी तक अमेरिका की बैपटिस्ट कलीसियाओं में "प्राचीन" पाये जाते रहे। दर-असल, दक्षिण बैपटिस्ट सभा के प्रथम अध्यक्ष, डब्ल्यू. बी. जॉनसन, ने एक शोध-प्रबन्ध लिखा जिसमें उसने प्राचीनों की बहुसंख्या को व्यवहार में लाने, उसे बाइबल-सम्बन्धी स्वीकार करने, तथा उसे अन्य बहुत-से बैपटिस्ट कलीसियाओं में पालन करने का अह्वान किया। परन्तु जॉनसन के इस अनुरोध की अनदेखी कर दी

गई। चाहे यह पवित्रशास्त्र की उपेक्षा करने के द्वारा हुआ, अथवा उस सीमांत पर पड़ रहे दबाव के कारण जहाँ कलीसिया अद्‌भुत रीति से बढ़ रही थीं, इस प्रकार के बने नेतृत्व को आगे बढ़ाने तथा उस पर चलने की प्रक्रिया को समाप्त कर दिया गया। परन्तु बैपटिस्ट लेखों में बाइबल-संबंधी इस पद को पुनर्जीवित रखने के लिए चर्चाएँ जारी रहीं। बीसवीं सदी के आरंभ तक बैपटिस्ट प्रकाशन, कलीसिया के अगुवों को "प्राचीन" नाम से पुकारने लगे।

कलीसिया-सभा —अंतिम कसौटी

बैपटिस्ट और प्रेसबिटीरियन कलीसियाओं में "प्राचीनों" से संबंधित समझ को लेकर दो बुनियादी फर्क रहे हैं। पहला और सबसे ज्यादा बुनियादी तौर पर यह, कि बैपटिस्ट धर्म-संघवादी (कौंग्रिगेश्नलिस्ट्स) होते हैं; अर्थात् वे यह समझते हैं कि कलीसिया-सभा में मसलों पर अंतिम निर्णय प्राचीनों का नहीं होता है (अथवा इसके विपरीत, जैसा कि प्रेसबिटीरियन नमूने में है), बल्कि सम्पूर्ण कलीसिया सभा का होता है। इसलिए, बैपटिस्ट कलीसिया में सहमति के आधार पर कलीसियाई कार्रवाई करने पर ज़ोर दिया जाता है। अतः, बैपटिस्ट कलीसिया में, प्राचीन और अन्य परिषद् तथा समितियाँ अंततः संपूर्ण कलीसिया के लिए एक परामर्शी की क्षमता में कार्य करती हैं।

इसके अतिरिक्त एकत्र हुई कलीसिया-सभा के अधिकार का विषय विचाराधीन है। मसीह के अधीन एकत्रित स्थानीय कलीसिया को छोड़, प्रतिवेदन (अपील) का अंतिम न्यायालय और कोई दूसरा नहीं है। 'नये नियम' में बार-बार हमें ऐसा प्रमाण मिलता है जिस में कलीसियाई-सदस्यता का आरंभिक स्वरूप समूहवादी प्रतीत होता है। मत्ती 18 में जब यीशु अपने शिष्यों को, एक पापमय भाई को समझाने के विषय में शिक्षा दे रहा था, तो वहाँ अन्तिम न्यायालय "प्राचीन" नहीं हैं, न ही बिशप अथवा पोप, न ही कोई परिषद् अथवा महासभा। अंतिम न्यायालय कलीसिया है। प्रेरितों के काम 6 में, प्रेरितों ने डीकनों का निर्णय कलीसिया-सभा को सौंप दिया था।

पौलुस की पत्रियों में भी हमें इसी मान्यता का प्रमाण मिलता है कि यह अंतिम ज़िम्मेदारी कलीसिया ही की है। 1 कुरिंथियों 5 में, पौलुस ने पास्टर, प्राचीनों अथवा डीकनों को दोषी नहीं ठहराया, परन्तु पाप को सहन करते रहने के लिए कलीसिया को दोषी ठहराया। 2 कुरिंथियों 2 में, पौलुस ने इस बात का उल्लेख किया है कि एक भटके हुए सदस्य को अनुशासित करने के लिए लोगों ने उसे बहुमत से क्या किया। गलातियों की पत्री में पौलुस ने कलीसिया का आह्वान किया कि वे उस शिक्षा की जिसे वे सुन रहे थे निंदा करे। 2तीमुथियुस 4 में पौलुस ने न केवल झूठे शिक्षकों की

निंदा की, परन्तु उनकी भी जो अपने कानों की खुजली दूर करने के लिए धन देकर वह सब सुनते थे जो वे सुनना चाहते थे। प्राचीन लोग नेतृत्व करते हैं, परन्तु वे यह बाइबल के अनुसार व अनिवार्य रूप से कलीसिया द्वारा मान्य सीमा के भीतर रहकर करते हैं।

समस्त प्राचीन "अध्यापन-प्राचीन"

दूसरी असहमति प्राचीनों की भूमिकाओं एवं उनकी ज़िम्मेदारियों के विषय में है। प्रेसबिटीरियन कलीसिया ने 1 तीमुथियुस 5:17 में तीमुथियुस को दिए गए पौलुस के इस कथन पर बल देना चाहा—"वे प्राचीन जो कलीसिया में अच्छा प्रबंध करते हैं वे दो गुने आदर के योग्य समझे जाएँ, विशेषकर वे जो प्रचार और शिक्षा-कार्य में कठिन परिश्रम करते हैं।" कुछ का तर्क था कि अंतिम वाक्यांश में बड़े स्पष्ट रूप से कहा गया है कि प्राचीनों का मुख्य कार्य वचन सुनाना या सिखाना नहीं, बल्कि कलीसिया का संचालन व प्रशासन करना था। प्रेसबिटीरियन कलीसिया में "प्रशासक-प्राचीनों" (सहायक प्राचीनों) और "अध्यापन-प्राचीनों" (सेवकों) के बीच पाये जाने वाले अन्तर का यही उद्गम है।

परन्तु शब्द "विशेषकर," यूनानी शब्द "मलिस्ता" का संदेहास्पद अनुवाद है, जिसका इस संदर्भ में बेहतर अनुवाद "निश्चित रूप से" अथवा "विस्तृत रूप से" है। इसके पूर्व 1 तीमुथियुस 4:10 में हमने पढ़ा था, "हम इसलिए परिश्रम और प्रयत्न करते हैं, क्योंकि हमारी आशा जीवित परमेश्वर पर स्थिर है जो सब मनुष्यों का—विशेषकर (मलिस्ता) विश्वासियों का—उद्धारकर्ता है।" पौलुस यहाँ यह कहते प्रतीत होता है कि मानो जब विश्वास किये बिना ही अधिक से अधिक लोग उद्धार प्राप्त कर सकते हैं तो फिर बिना सुसमाचार-प्रचार व शिक्षण के वे कलीसिया के कार्यों का संचालन भी करेंगे—दूसरे शब्दों में, ऐसा कुछ भी नहीं।

नये नियम में बैपटिस्ट लोगों ने "प्राचीन," सर्वेक्षक और पास्टर जैसे शब्दों की अदला-बदली पर ज़ोर दिया है और यह बताया है कि 1 तीमुथियुस 3:2 में पौलुस ने तीमुथियुस को स्पष्ट रूप से बताया कि प्राचीनों को "सिखाने में निपुण" होना आवश्यक है। उसने तीतुस को लिखा कि एक प्राचीन "उस विश्वासयोग्य वचन पर स्थिर रहे जो धर्मोपदेश के अनुसार है, जिससे कि वह खरी शिक्षा का उपदेश देने और विरोधियों का मुँह बंद करने में भी समर्थ हो" (तीतुस 1:9)। इसलिए बैपटिस्ट लोगों ने प्रायः इस औचित्य से इनकार किया है कि प्राचीनों को वचन की शिक्षा देने में सक्षम होना ही चाहिए।

बहरहाल, जिस बात पर अट्ठारवहीं सदी के बैपटिस्ट और प्रेसबिटीरियन कलीसियाओं में प्रायः सहमति रही, वह यह कि प्रत्येक स्थानीय कलीसिया में प्राचीन

**प्राचीनों की बहुसंख्या**

बहुसंख्या में होने चाहिए। हालाँकि इसमें कभी किसी समूह-विशेष के लिए प्राचीनों की निश्चित संख्या का कोई संकेत नहीं मिलता, जैसा कि नया नियम बड़ी सफाई से "प्राचीनों" का स्थानीय कलीसियाओं में बहुसंख्यक होने की ओर संकेत करता है (जैसे, प्रेरितों 14:23; 16:4; 20:17; 21:18; तीतुस 1:5; याकूब 5:14)। मेरा अपना अनुभव नये नियम की प्रक्रिया को अपनाने की उपयोगिता की पुष्टि करता है कि जहाँ तक संभव हो, स्थानीय कलीसिया में एकमात्र अकेले पासबान की अपेक्षा अधिक प्राचीन हों, और उनकी पैठ कलीसिया में लोगों तक हो। यह प्रचलन आज बैपटिस्ट कलीसियाओं में असामान्य है, परन्तु इसकी ओर एक बढ़ता हुआ झुकाव है—और एक अच्छे कारण के लिए तो इसकी आवश्यकता नये नियम की कलीसियाओं में थी, और अभी भी है।

**पासवान (पास्टर) की भिन्न भूमिका**

इसका अर्थ यह नहीं कि पास्टर की कोई विशिष्ट भूमिका ही नहीं है। नये नियम में प्रचार करने तथा प्रचारकों के लिए बहुत से उद्धरण हैं जो कलीसिया-सभा के सभी प्राचीनों पर लागू नहीं होंगे। अतः कुरिंथ नगर में पौलुस अपने को केवल सुसमाचार-प्रचार-कार्य के लिए ऐसे सौंप दिया जैसा कि किसी कलीसिया में एक सहायक प्राचीन (प्रेरितों 18:5; 1 कुरिंथियों 9:14; 1 तीमुथियुस 4:13; 5:17)। ऐसा लगता था कि प्रचारक किसी क्षेत्र में केवल प्रचार करने निकल जाया करते थे (रोमियों 10:14-15), जब कि प्राचीन पहले से ही समूह का भाग प्रतीत होते थे (तीतुस 1:5)। [इस भिन्नता पर अधिक जानकारी के लिए देखें, "अ डिसप्ले ऑफ गॉड्स ग्लोरी" (सीसीआरः 2001)]।

**प्राचीनों की बहुसंख्या के लाभ**

बहरहाल, हमें यह स्मरण रखना चाहिए कि प्रचारक या पास्टर मूलतः अपनी सभा के प्राचीनों में से ही एक है। इसका अर्थ है कि यह ठीक है कि यदि कलीसिया से संबंधित निर्णयों में कलीसिया के सभी सदस्यों के ध्यान की आवश्यकता नहीं, तो फिर वह सब कुछ केवल पास्टर के ऊपर ही नहीं आना चाहिए—बल्कि सभी प्राचीनों के ऊपर। यद्यपि यह कभी-कभी कठिन होता है, फिर भी इसके बहुत-से लाभ हैं—जैसे पास्टर के वरदानों को विस्तृत करना, उसकी कुछ कमियों को पूरा करना, उसके निर्णयों में अपना योगदान देना, कलीसिया-सभा में इन निर्णयों के लिए समर्थन जुटाना कि अगुवों की अनुचित आलोचना न हो। इससे नेतृत्व अधिक मज़बूत तथा स्थायी बनता है, और यह अधिक परिपक्वता एवं निरंतरता प्रदान करता है। यह कलीसिया को उसकी आत्मिकता के लिए और अधिक जिम्मेदारी लेने के लिए प्रोत्साहित करता है, तथा उसे अपने कर्मचारियों पर कम से कम आश्रित रहने में उसकी मदद करता है।

प्राचीनों और डीकनों में भ्रम

अनेक आधुनिक कलीसियाओं ने अपने कर्मचारीगण और डीकनों को लेकर प्राचीनों को भ्रम की स्थिति में डाल दिया है। डीकन भी नये नियम की कलीसिया का एक पद है जो प्रेरितों 6 में पाया जाता है। जबकि ठीक-ठीक इन दो पदों (पदवियों) में किसी प्रकार का अंतर करना कठिन है, फिर भी डीकनों का कार्य कलीसियाई जीवन की व्यावहारिक चीज़ों से सम्बन्धित है: जैसे, प्रशासन, रख-रखाव, तथा कलीसिया के सदस्यों की उनकी भौतिक आवश्यकताओं से संबंधित देख-भाल, इत्यादि। आज बहुत-सी कलीसियाओं में डीकनों ने कुछ आत्मिक भूमिका भी ले ली है; परन्तु अधिकतर यह पासबान पर छोड़ दिया गया है। पुनः यदि प्राचीन तथा डीकन की भूमिका को स्पष्ट कर दिया जाए, तो इससे कलीसिया को ही लाभ होगा।

"प्राचीन" बाइबल-सम्बन्धी वह पद है जिसे मैंने पासबान के रूप में सँभाल रखा है। परन्तु सभी प्राचीनों को कलीसिया की आत्मिक उन्नति के लिए मिलकर नियमित रूप से प्रार्थना व विचार-विमर्श करने, अथवा डीकनों या कलीसिया के लिए सुझाव तैयार करने चाहिए। स्पष्टरूप से यह एक बाइबल-संबंधी विचार है जिसका अपना व्यावहारिक मूल्य है। यदि इन्हें हमारी कलीसियाओं में लागू किया जाए, तो यह पास्टरों के कंधों से बोझ हटाने और यहाँ तक कि उनकी कलीसियाओं से तुच्छ तानाशाही को भी हटाने में अत्यन्त सहायक होगा। वास्तव में, प्राचीनों के रूप में धर्मपरायण, विवेकी, भरोसेमन्द सामान्यजन की पहचान करने की प्रथा स्वस्थ कलीसिया का एक और चिह्न अथवा प्रमाण है।

## पुनर्विचार के लिए प्रश्न

1. मत्ती 18:15-17 पढ़ें। यीशु एक अपराधी भाई के निर्णय में आग्रह (अपील) करने के अन्तिम न्यायालय के रूप में किसे मानता है? अब प्रेरितों 6:1-4 को पढ़ें। प्रेरित लोग सात डीकन चुनने का कार्य-भार किसे सौंपते हैं? 2 कुरिंथियों 2:6 भी पढ़ें। इस व्यक्ति को दण्ड किसके द्वारा दिया गया? कलीसिया के संबंध में अंतिम अधिकार किसका है, इसके बारे में ये परिच्छेद क्या संकेत देते प्रतीत होते हैं?

2. तीतुस 1:5 पढ़ें। यह समझते हुए कि कलीसिया में अंतिम अधिकार एकत्रित कलीसिया-सभा का है, आप क्या सोचते हैं कि फिर भी पौलुस ने क्यों प्रत्येक कलीसिया में प्राचीनों के होने को एक समझदारी समझी?

3. 1 तीमुथियुस 3:1-6 में पौलुस ने प्राचीनों के लिए आवश्यक योग्यताओं की एक सूची दी है। कुछ समय इस पर विचार करें कि एक कलीसिया के अगुवे में ये

चारित्रिक गुण महत्त्वपूर्ण क्यों हैं? आप की कलीसिया में कौन इन योग्यताओं पर खरा उतरता है?

4. प्रेरितों 6:1-4 पढ़ें। एक डीकन तथा कलीसियाई मामलों के निरीक्षण करने वाले व्यक्ति की भूमिका में क्या अन्तर है? क्या आप की कलीसिया अपने शासन में के उस अन्तर को पहचानती है?

5. प्रेरितों 6 से हम सीखते हैं कि डीकनों का कार्य कलीसियाओं के सदस्यों की भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति करना है कि कलीसिया के सर्वेक्षकों (प्रेरितों, प्राचीनों, पास्टरों) को प्रार्थना करने, वचन-प्रचार करने के लिए मुक्त किया जा सके। आप की कलीसिया की कुछ चली आ रही भौतिक आवश्यकताएँ क्या हैं जो डीकनों द्वारा पूरी की जा सकें? कलीसिया की एकता को बनाए रखने या कलीसिया में वचन के प्रचारकों को प्रोत्साहित करने के लिए, आप की कलीसिया में डीकनों को और कौन-कौन सी दूसरी भूमिकाएँ निभाने की आवश्यकता है?

# उपसंहार

जब हम यह ठीक-ठीक मान लें कि वे जो कलीसिया में हैं वे नयी सृष्टि हैं, और वे जो नयी सृष्टि हैं वे कलीसिया के प्रति वचनबद्ध हैं, तब नये नियम-कलीसिया की छवि हमारी कलीसिया-सभाओं में सुस्पष्ट चित्रित की जा सकती है। अपनी बड़ी दयालुता में, परमेश्वर ने हमें एक साथ मसीही जीवन जीने के लिए बुलाया है कि हमारा आपसी प्रेम और ध्यान, परमेश्वर के प्रेम और ध्यान को व्यक्त कर सके। संसार में संबंधों का अर्थ वचनबद्धता हैः तो निश्चितरूप से यह कलीसिया के लिए उससे तनिक भी कम नहीं है।

मूसा द्वारा दी गई तीसरी आज्ञा (निर्गमन 20:7; व्यवस्थाविवरण 5:11) में परमेश्वर ने अपने लोगों से उसका नाम व्यर्थ में न लेने की चेतावनी दी। मात्र अपवित्रता का निषेध करने से कहीं अधिक, इस आज्ञा में परमेश्वर का नाम निरर्थक, ख़ाली, अकारण, अथवा किसी गलत उद्देश्य से लेने की भी मनाही है।

यह आज्ञा कलीसिया में हमारे लिए है। आज बहुत-सी कलीसियाएँ रुग्ण हैं। स्वार्थमय लाभ को हम आत्मिक वृद्धि मानने की गलती कर बैठते हैं। आवेश-मात्र को हम सच्ची आराधना करने की गलती कर बैठते हैं। बजाए इस प्रकार जीने के कि अपने ऊपर सांसारिक विरोध लाएँ, हम सांसारिक स्वीकृति को सँजोते हैं। बिना अपनी सांसारिक रूपरेखा की परवाह किये, आज बहुत सारी कलीसियाएँ उन्हीं बाइबल-संबंधी चिह्नों के बारे में निश्चिन्त जान पड़ती हैं जिनसे एक जीवित और विकसित हो रही कलीसिया की पहचान होनी चाहिए। कलीसिया का स्वास्थ्य सभी मसीहियों की चिंता का विषय होना चाहिए, विशेषतः उनका जो कलीसिया में अगुवे होने के लिए बुलाए गए हैं।

हमारी कलीसियाओं का कर्तव्य है कि वे परमेश्वर और उसके तेजस्वी सुसमाचार को उसकी सृष्टि के समक्ष प्रदर्शित करें। हमें साथ मिलकर अपने जीवनों से उसकी महिमा का कारण होना है। प्रदर्शन का यह बोझ हमारा विस्मयकारी दायित्व और एक बड़ा सौभाग्य है।

(परिशिष्ट)

# एक स्वस्थ कलीसिया का ठेंठ प्रतिज्ञा-पत्र

जैसा हम विश्वास करते हैं कि परमेश्वर के अनुग्रह से प्रभु यीशु मसीह में पश्चाताप और विश्वास के लिए लाए जाने के द्वारा हमें अपने को उसके हाथ में दे दिये जाने के कारण और हमारे विश्वास के अंगीकार के पश्चात् पिता और पुत्र और पवित्र-आत्मा के नाम में बपतिस्मा दिये जाने और उसकी अनुग्रहकारी सहायता के द्वारा, अब हम दृढ़ता और आनन्दपूर्वक एक दूसरे के साथ अपनी प्रतिज्ञा का नवीनीकरण करते हैं।

हम शान्ति के बंधन में पवित्र आत्मा की एकता के लिए कार्य और प्रार्थना करेंगे।

मसीही कलीसिया के सदस्य होने की हैसियत से हम भाई-चारे के प्रेम में एक साथ मिलकर चलेंगे; एक दूसरे की स्नेहमय देख-भाल तथा चौकसी करेंगे और समय-समय पर आवश्यकता पड़ने पर निष्ठापूर्वक एक दूसरे को सचेत करेंगे तथा अनुनय-विनय करेंगे।

हम अपना एक साथ मिलना-जुलना नहीं छोड़ेंगे, और न ही हम एक दूसरे के लिए तथा अन्य लोगों के लिए प्रार्थना करना छोड़ेंगे।

हमारी हर समय यह कोशिश होगी कि वे जो हमारे संपर्क में हैं, उनका पालन-पोषण व उनकी ताड़ना प्रभु के संरक्षण में हो, और शुद्ध एवं प्रेमी जीवन का आदर्श प्रस्तुत करते हुए अपने कुटुम्ब व मित्रों के उद्धार की कामना करेंगे।

हम एक दूसरे के आनन्द में आनंदित होंगे, और एक दूसरे के बोझ तथा दुख को कोमलता एवं सहानुभूतिपूर्वक वहन करने का प्रयास करेंगे।

परमेश्वर की सहायता से हम इस संसार में सतर्कतापूर्वक जीवन व्यतीत करेंगे, दुष्टता तथा सांसारिक लालसाओं का परित्याग करेंगे, और स्मरण रखेंगे कि जैसे हम स्वेच्छा से बपतिस्मे के द्वारा गाड़े गए और प्रतीकात्मक क़ब्र में से जीवित किये गए हैं, वैसे ही अब हम पर एक नया और पवित्र जीवन जीने का एक विशेष दायित्व है।

हम इस कलीसिया में आराधना, विधियों, अनुशासन और सिद्धान्तों को कायम रखते हुए सुसमाचारी सेवा निष्ठापूर्वक स्थिर रखने के लिए परस्पर कार्यरत रहेंगे। हम सेवा के सहायतार्थ, कलीसिया के ख़र्चों, गरीबों की सहायता और समस्त देशों में सुसमाचार-प्रचार करने के लिए उत्साहपूर्वक तथा सतत् रूप से सहयोग देंगे।

जब हम इस स्थान से कहीं और चले जाएँ, तो जैसे ही संभव हो हम किसी दूसरी कलीसिया के साथ मिल जाएँगे, जहाँ हम अपनी इस वाचा की आत्मा और परमेश्वर के वचन के सिद्धान्तों का पालन कर सकें।

प्रभु यीशु का अनुग्रह और परमेश्वर का प्रेम और पवित्र आत्मा की सहभागिता हम सब के साथ हो। आमीन।

# पवित्रशास्त्र सन्दर्भ-सूची


उत्पत्ति 1 ..... 12,14
उत्पत्ति 1:27 ..... 43
उत्पत्ति 6:5 ..... 29
उत्पत्ति 12 ..... 12

निर्गमन 20:7 ..... 61

लैव्यव्यवस्था 19:2 ..... 43

गिनती 15:30-31 ..... 43

व्यवस्थाविवरण 5:11 ..... 61

यहोशू 7 ..... 44

नहेम्याह 8:7-8 ..... 14
नहेम्याह 8:8 ..... 11
नहेम्याह 8:12 ..... 14

नीतिवचन 24:1 ..... 43
नीतिवचन 24:25 ..... 43

यहेजकेल 37 ..... 12

योना 2:9 ..... 31

मत्ती 5:16 ..... 51
मत्ती 7:1 ..... 43, 45
मत्ती 18 ..... 12, 44, 56
मत्ती 18:15-17 ... 43, 46, 59
मत्ती 23 ..... 44

मरकुस 1:15 ..... 25

लूका 2 ..... 44
लूका 9:62 ..... 32
लूका 17:3 ..... 43
लूका 24:27 ..... 13

यूहन्ना 1:12-13 ..... 31, 32
यूहन्ना 1:13 ..... 32
यूहन्ना 3:18 ..... 33
यूहन्ना 3:36 ..... 33
यूहन्ना 5:27-30 ..... 46
यूहन्ना 10:10 ..... 33

प्रेरितों के काम 2 ..... 52
प्रेरितों के काम 2:41 ..... 52
प्रेरितों के काम 5 ..... 44
प्रेरितों के काम 6 .... 56,59,60
प्रेरितों के काम 6:1-4 ... 59,60
प्रेरितों के काम 6:4 ..... 13
प्रेरितों के काम 11:18... 28,29
प्रेरितों के काम 14:23 ..... 58
प्रेरितों के काम 16:4 ..... 58
प्रेरितों के काम 16:14 ..... 31
प्रेरितों के काम 17 ..... 45
प्रेरितों के काम 18:5 ..... 58
प्रेरितों के काम 18:9-10 ... 32
प्रेरितों के काम 20 ..... 55
प्रेरितों के काम 20:17 ..... 58
प्रेरितों के काम 20:27 ..... 14
प्रेरितों के काम 21:18 ..... 58

रोमियों 8:7 ..... 29
रोमियों 9 ..... 44
रोमियों 10:9 ..... 31
रोमियों 10:14-15 ..... 58
रोमियों 10:17 ..... 12, 14
रोमियों 12:19 ..... 44
रोमियों 13 ..... 44
रोमियों 14:1-4 ..... 46
रोमियों 14-15 ..... 45

1 कुरिंथियों 1:21 ..... 13, 14
1 कुरिंथियों 2:2 ..... 24
1 कुरिंथियों 3 ..... 44
1 कुरिंथियों 3:6ब-7 ..... 51
1 कुरिंथियों 5 37,44,45
1 कुरिंथियों 5:1-2 ..... 46
1 कुरिंथियों 5:3-5 ..... 46
1 कुरिंथियों 5-6 ..... 44
1 कुरिंथियों 9:14 ..... 58
1 कुरिंथियों 11:28 ..... 44
1 कुरिंथियों 12:14-26 ..... 41

2 कुरिंथियों 2 ..... 37, 56
2 कुरिंथियों 2:6 ..... 37, 59
2 कुरिंथियों 6:14-7:1 ..... 43
2 कुरिंथियों 10:15 ..... 49
2 कुरिंथियों 13:2 ..... 43

इफ़िसियों 2:1-10 ..... 29
इफ़िसियों 2:8 ..... 28
इफ़िसियों 2:8-9 ..... 32
इफ़िसियों 4:15 ..... 49
इफ़िसियों 6:19-20 ..... 13

फिलिप्पियों 4:3 ..... 32

कुलुस्सियों 1:10 ..... 49
कुलुस्सियों 2:19 ..... 51

2 थिस्सलुनीकियों 1:3 ..... 49

1 तीमुथियुस 1 ..... 17, 44
1 तीमुथियुस 3 ..... 45
1 तीमुथियुस 3:1-6 ..... 59
1 तीमुथियुस 3:2 ..... 57
1 तीमुथियुस 4:10 ..... 57
1 तीमुथियुस 4:13 ..... 58
1 तीमुथियुस 5 ..... 37
1 तीमुथियुस 5:17 ..... 57, 58
1 तीमुथियुस 6:3 ..... 17
1 तीमुथियुस 6:3-5 .... 20, 43

2 तीमुथियुस 1:13 ..... 17
2 तीमुथियुस 3:1-5 ..... 43
2 तीमुथियुस 4 ..... 12, 56
2 तीमुथियुस 4:3 ..... 17

तीतुस 1:5 ..... 58, 59
तीतुस 1:9 ..... 14, 21, 57
तीतुस 1:13 ..... 17
तीतुस 2:1 ..... 17

इब्रानियों 4 ..... 44
इब्रानियों 10:25 ..... 39
इब्रानियों 12 ..... 44
इब्रानियों 13:17 ..... 41

याकूब 3:1 ..... 45
याकूब 5:14 ..... 58

1 पतरस 2:1-3 ..... 51
1 पतरस 2:2 ..... 49
1 पतरस 2:12 ..... 51

2 पतरस 1:5 ..... 44
2 पतरस 3 ..... 45
2 पतरस 3:18 ..... 51
2 यूहन्ना ..... 45

प्रकाशितवाक्य 20 ..... 44
प्रकाशितवाक्य 21:27 ..... 37

# पवित्रशास्त्र सन्दर्भ-सूची

उत्पत्ति
1
1:27
12
निर्गमन
20:7
लैव्यव्यवस्था
19:2
गिनती
15:30-31
व्यवस्थाविवरण
5:11
यहोशू
7
नहेम्याह
8:8
नीतिवचन
24:1
24:25
यहेजकेल
37
योना
2:9
मत्ती
5:16
7:1
18
18:15-17
23
लूका
2
9:62
17:3
24:27
यूहन्ना
1:12-13
1:13
3:18
3:36
10:10
प्रेरितो के काम
5
6
6:1-4
6:4
11:18
14:23
16:4
16:14
17
18:5
18:9-10
20
20:17
21:18
रोमियों
9
10:9
10:14-15
10:17
12:19
13
14-15
1 कुरिंथियों
1:21
3:6b-7
5
5-6
9:14
11:28
2 कुरिंथियों
2
6:14-7:1
10:15
इफ़िसियों
2:8
2:8-9
4:15
6:19-20
फिलिप्पियों
4:3
कुलुस्सियों
1:10
2:19
2 थिस्सलुनीकियों
1:3
1 तीमुथियुस
1
3
3:2
4:10
4:13
5
5:17
6:3
6:3-5
2 तीमुथियुस
1:13
3:1-5
4:3
तीतुस
1:5
1:9
1:13
2:1
इब्रानियों
4
10:25
12
याकूब
3:1
5:14
1 पतरस
2:2
2:12
2 पतरस
1:5
3
3:18
2 यूहन्ना
प्रकाशितवाक्य
20
21:27

**आज बाज़ार में अनेक पुस्तकें और परिपथ पर वक्ता यह दावा कर रहे हैं कि लगभग प्रत्येक कल्पनीय (मनोगम्य) गुण, आराधना-पद्धति, कमप्यूटर-कार्यक्रम, पुस्तक, ध्वनि-प्रणाली, गोष्ठी, धर्म-सेवा, शिक्षा, कार्यक्रम, समूह, दर्शन (शास्त्र), प्रणाली-विज्ञान, सिद्धान्त, सद्‌गुण, आत्मिक मुठभेड़, वाहन-पड़ाव नमूना अथवा प्रबन्ध संरचना एक सफल कलीसिया की कुंजी है। सही कौन है? आप यह कैसे कह सकते हैं कि कोई कलीसिया स्वस्थ है? आप यह कैसे कह सकते हैं कि आप की कलीसिया स्वस्थ है? आप बाइबल-सम्बन्धी, कायम रहने योग्य और परमेश्वर को महिमा प्रदान करने वाले विकास को प्रोत्साहित करने के लिए क्या कर सकते हैं?**

*आज उत्तर भारत के अनेक भागों में बहुतेरी कलीसियाएँ स्थापित की जा रही हैं। एक तरफ जबकि परमेश्वर द्वारा किये जा रहे सारे कार्यों के लिए हम उसकी बड़ाई करते हैं, तो वहीं यह पूछना अच्छा है कि—"किस प्रकार की कलीसियाएँ स्थापित की जा रही हैं?" वे न तो बैपटिस्ट कलीसियाएँ अथवा पैंटिकॉस्टल कलीसियाएँ हैं, वे न तो गृह कलीसियाएँ अथवा सुव्यवस्थित कलीसियाएँ हैं; परन्तु क्या वे स्थायी फल उत्पन्न करने वाली गहरी जड़ों युक्त स्वस्थ कलीसियाएँ भी हैं?*

*यह संक्षिप्त पुस्तिका हमें यह सोचने में मदद करती है कि एक स्वस्थ कलीसिया कैसी दिखाई देती है।*

*मार्क ई. डेवर वॉशिंगटन डीसी में कैपिटल हिल बैपटिस्ट चर्च के पास्टर हैं। उन्होंने डयूक यूनिवर्सिटी में पढ़ाई की, तथा गोर्डन-कॉनवेल थियोलॉजिकल सेमिनरी से एम.डिव., सदर्न बैपटिस्ट थियोलॉजिकल सेमिनरी से टीएच. एम. और कैंब्रिज विश्वविद्यालय से पीएच. डी. की उपाधि प्राप्त की। वह अपनी पत्नी कोनी तथा दो बच्चों, ऐनी और नेथन के साथ वॉशिंगटन में रहते हैं।*

IX चिन्ह

**9चिन्ह**
**525 ए स्ट्रीट एनई वॉशिंगटन, डीसी 20002**
**फोन (202) 543-1224, फैक्स (202) 543-6113**
**वैबसाइटः www.9marks.org**